॥ अथ ग्रंथ में यह मङ्गला चै
रण का श्लोक लिखा है सो यह है
आनन्द मात्र धृत मा यु तेलोचनानाः
मानी तत्र मा वलित केधर मात वर्षा
भापाद मामकट मा कालिता भ्र तेः
धं मा कोप मा क [illegible] तामम [illegible]
रुते ॥ १ ॥ श्री तद्दूष [illegible] ग्रंथ का प्रा
क मङ्गला चैरण को लिखते [illegible]
श्लोक ॥ श्र [illegible] जो [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...धी पुष्प ... नपुंसक को भी ...
...ते हैं सो ति सते है चिकित्सा रत्नोक्त
...ने सार

...ताम्रक १	कचूर २...
...फल २	मदन २१
...ट २	आय फल...
...गजंघ ४	पिंड्यान मव...
...मस्ता ५	...
...ण्डा ६	...
...चरस ७	...
...ति तरिकंद ८	...
...मूशली ९	...
...कचूर १०	...३१ ...
...चूर ११	२२ ... २३ ...
...भाकंद १२	... ३५ ...
...तावरी १३	३६ ...
...गजमद १४	...धी ...
...का १५	...कार ...
...तेला १६	विज ...
...धनिया १७	...
...लेठी १८	...
...कजवला १९	...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...मीठी ... मकी ... ओर

औषधी बावासीर
रसौत १मा॰
गूगल धोया
राल १मा॰
वकायनकी गिरी
१मा॰
निबोली गिरि १मा॰
नाली धो सबको अर्क
जो ली कूट कर के
माजुफल से खाय
...
...
...
कूटनी चाहिये"
औषध प्रमेह की
...
...
...
...
...
सेककोइ लेनी

निकाल कर
...
जो ली झाड़ी के बेर
प्रमाण जो ली बांधे
शूल दूर होय

जिसके भ खपर
...
...
...
है" ...
...
...
लेप करें ...
...
बचे ...
...
...
लेप करे तीन दि
न तक ...
दूर होजा"

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नीय स्वर्णशृंगाद्यलंकृतां गां वेदविदे दद्यात् ततो देव्या
विसर्जनम् फलाभिलाषी यथा पट्टे स्थापयेत् परमेश्वरीं विधि
ना [illegible] पुत्रपौत्ररत्नादिभ्यो विमुच्यते। अथ ग्रामस्थितौ
स्थापयेद् देवं न पट्टे फलके तथा। अथ प्रयोगः। तत्र कृ
तनित्यक्रियः स्वस्तिवाचनपूर्वकं संकल्पं कुर्यात् ॐ अ
द्येत्यादि। अमुकगोत्रस्य। अमुकदेवशर्मा। अमुकदेवता
याः पूजार्थं। अमुकयंत्रसंस्कारमहं करिष्ये इति संकल्पः
पंचगव्यमानीय। ह्रौं इति बीजे। अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य पित्वा
मध्यस्थाने यंत्रं निवेशयेत् ततः उत्तानपाणिस्तं स्थापयेत् पंचा
मृतमानीय ह्रौं इति मंत्रेण पूर्ववत् [illegible] स्थापयेत् पु
नः क्रमशः [illegible] पञ्चामृतेन [illegible] स्नापयेत् पु
[illegible] एवं दध्ना [illegible] तेन मधुना [illegible] ततो
दुग्धेन ततो जलेन पुनः [illegible] गंधोदकेन ततः
पूर्ववत् [illegible] फलपुष्पकषायजलसर्वौषधिकुंकुमादिभिः
तैस्तोयैः स्नापयेत् सर्वं गंधस्नानं मूलमंत्रेण ततो यंत्र
[illegible] कुर्यात्। तत्र प्राणप्रतिष्ठामंत्रं
अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छंदांसि
चैतन्यो देवता प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः। तत्र न्यासः
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं। अमुकप्राणा
इह प्राणा एवं मम जीव इह स्थितः। अमुकदेवताया
सर्वेंद्रियाणि इह स्थितानि। अमुकदेवताया वा
ङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं
तिष्ठंतु स्वाहा इति प्राणप्रतिष्ठा ततः देवतां आवाह्य
पञ्चोपचारैः षोडशोपचारैर्वा पूजयेत्ततः [illegible] आदि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

२१से जकरावन के सेवी संतति न बहुथ होती है
सताह के वारवने सेवी नहीं करनी है ॥

कृत्वाऽष्टोत्तरसहस्रं जप्त्वा ... लिंद ...
ततोऽष्टोत्तरशतं होमं कुर्यात् अत्याहुति संपाते च
... होमाभावे द्विगुणं जपः कर्तव्यः ततो दधि
... ब्राह्मणं कुर्यात् ॥ इति यंत्रसंस्कार प
द्धतिः ॐ तत्सत् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मत्स्यवर मु
द्रा ॥ सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा एकमुखं द्वि
मुखं त्रिमुखं चैव चतुर्मुखं पंचमुखं षण्मुखं चोर्ध्वा
मुखं व्यापकं अंजलिकं शकटं यमपाशं ग्रथितं चोन्मुखो
न्मुखं तथा प्रलंबं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वरा
हकौ सिंहाक्रांतं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥
... गायत्र्याः प्रतिष्ठिता ॥ ...
... कूर्मोऽथ ... लिंगानि ...
दूरे अर्पाते ... इति मत्स्य ... मुद्राः ...
इति चतुर्विंशति मुद्राः समाप्ताः ॥ ... श्री ॥

मंत्र गर्भाधान का ॥ ॐ महिरासि म्राथ रसिस
वेत: प्रातिष्ठा गसि धाता त्वां दधातु भवेदेमि
वचेसाद प्रीत्र ला प्रजापति विच्छसो
मस्य ... भगाथ भित्र वरु
वीरे ... सतम् ॥ इस मंत्र को
सपूर्ण जप कर के भोग करना गर्भ
जरूर ... गा ...
गवन्हत गावि उससम ...
औरत मता प ... के सामने है

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मंत्र शास्त्र विषयो वर्ण्यते
ज्ञापनपत्रम ॥ सभ्य महाशयों को विदित हो कि य
ह मंत्रशास्त्र बहुत काल से लोप हो रहा है कारण
यह है कि अल्प बुद्धि वाले मनुष्य गुरु संप्रदाय के वि
ना केवल पुस्तक को देखकर मंत्रों को जप करने लग
ते हैं और कराते हैं इस को कुछ भी सिद्धि नहिं
होती है और बहुत से मनुष्य अभिचार प्रयोगों में हैं
और कुछ भी कार्य सिद्ध नहिं होता है इन बातों से
विदित होने से जानना है कि मंत्रों का ठीक ठीक जा
नना कठिन है देखो ॥ कुलार्णव में लिखा है
मं ॥ मंत्र विद्या विभाग में सिद्धि विधाः मन्त्रों
तथा मंत्राः पुंदेवता स्त्री देवता विद्या स्त्री देवता
स्मृताः पुंस्त्री संभव संज्ञाभि के मंत्रास्तव के
समीरिताः ॥१॥ अब मंत्र पुल्लिंग स्त्री लिंग और न
पुंसक लिंग जानिये है सो मंत्र महोदधी नामक
में विदित किया लिखा है ॥ इति प्रश्नोत्तरे मन्त्र [illegible]
स्वाहा से युक्त मंत्र: पाठस्य पुंस्त्व वेत्ति तं मु
नयः पुल्लिंग जानिये है अब कौन सा मंत्र पु
ल्लिंग जानना कौन सा स्त्री लिंग और [illegible]
क जानना कौन सा नपुंसक जानिये [illegible]
[illegible] कौन सी मंत्र संतान प्रभेद [illegible]
करना तो लेकर सब मंत्रों का [illegible] मैं [illegible]
जानना चाहिये कि यह मंत्र बहुत बड़ा है [illegible]
है आनंद सबसे बड़ा है सो गुरु के [illegible]
होता न अनुष्ठान करते हैं सो पुरुष [illegible]
नमे के [illegible] जो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

णवीना सोमंत्रोंकि जाति जानि-नाहि ये औ: कस
कौनसे मंत्र पुरुष हैं कौनसे स्त्री हैं कौनसे नपुं
सक हैं ॥ सत्व गुण मेंइ वताजो ये सो मंत्र रुद्र को
और कीलित धारि के मन के लिये गण मे ऐसा
भी लिखा है संपूर्ण मंत्र स्थापित कर दिये है
और पुराने कोई होकर प्रलय काल में प्रा
णके प्रबंडन के सजीवन करने की कौन
सी रीति है वह कुछ तदुये हुये कार्य का नहीं क
रसकि सो [illegible] वै मंत्रों मे दूषण है तिनको कहते
हैं भद्र के छिन्नादि दुष्ट ये मंत्र सब पल नति
साधा कोई क मंत्र कीलित हुवे हैं कोई सुप्त हुवे
कोई सतितिहि मे कोई प्रणष्ट भव कोई छिन्न
कोई मोहित कोई कीलित कोई स्तंभित कोई
दग्ध कोई भ्रांति माल्ने कोई मलिन कोई तिरस्कृ
त कोई भेदित कोई सुप्त कोई मदोन्मत्त कोई मू
र्छित कोई हत वीर्य कोई भयानक कोई प्रध्व
स्त कोई बालक कोई युवा कोई वृद्ध कोई नी
वीर्य कोई शिख हीन कोई मूढ कोई कूट कोई ति
रस्कृत कोई संपुटित कोई नीव लित कोई मोहित
कोई दीन धात कोई अतित्व पूजन कोई प्रमहीन
कोई स्वर हीन उर कोई लक्षित कोई मतिशान्त
कोई मह कोई [illegible] कोई [illegible] इतने दोष मंत्रों मे
लिखे हैं कोई न मंत्रों का दोष संसार कहैं तो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

देवी सर्वतंत्रेषु सुंदरी गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव सुंदरी यदा ॥
रिदुमापन्नो यद्यद्वंछते नरः ॥ तत्तदाप्नोति सकलं सर्वसिद्धिकरं स्थि
तोयदस्मात्त्वासाधयेत्सुमुखि विकवचोक्तमंत्र ॥ मत्या पुनिधने
त्वे वेमत्युत्तस्यभवेद्यदि शिष्यायमिर्भुलिपुत्राय देयमंत्रमयो
दितं ॥ मन्यथा यदि लोभेन स्वसर्वनाशयते ... ॥ पूर्वसेवाकर्ल
व्यानमान्यत्रियमः कचित्क्रोधप्रमादं कुर्याद्विकर्मासिद्धिर्भवि
ष्यति हे तिका यौगिन्य रचुर्णासाधितं भवति दर्णा तां भ
योगः ॥ प्रथमयोगी वक्ष्याभि राजवश्यकरं परं रा
जिका सुदृमपिष्टस्य प्रतिमाः कृत्वा मनवोसं
ख्या पञ्चासुरीमभक्तया सूत्र मंत्रेण स
धकः ॥ अग्निमावाह्ये मंत्री तन्मंत्रेण च वक्षुज
येत देवदत्तस्य वश्यार्थं मुहिहेमप्रकल्प
येत् करेण्यध्ये पवसंकल्पयजुहुयात् देवी
मूर्तिक्रमेण हितामनादस्मार्थप्रूति
यावदष्टोत्तरं सतं सप्ताहमेवजुहुयात् घा
तराज्ञोऽपि वश्यतां ॥ अनेनकाकथा देवी
यत्न सिद्धिर्दविद्यते ॥ अथ दुष्टसभ्रमं
भवेत् ॥ आसुरीलवणो वेतां ...तैल
समन्वितां होमयेदष्टोत्तर प्रातनित्यं स
प्ताह संभ्रमं भवेत ॥ अथो चाटनं कुक्कु
टमांसं दुग्धे सप्तदिनान्यष्टोत्तर प्रातम
... नि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त्त्वपत उच्चाटयतिवेगेन सकुटुंवरिपोः
कुलम् ॥ अथ मारणम् ॥ आसुरि कटु तैले
न प्रकोमल होतरं वातं त्रिसंध्यं सप्तरात्रं तु
तंतसाम्नि म्रियते रिपुः यत्र रोमालि जुहुया
दासुरी मिश्रिता निंवरेगेण अभ्येते
कस्माद्यदिसाता लुरं दरः घृताक्तामासु
रीं हुत्वा सद्यः सुखमवाप्नुयात् ॥ अथ मोह
नम् ॥ चिताभस्म समादाय महामांस
तथासुरी हुत्वैव होतव्यं वातं नदूस्मनकीरग
लेन ॥ अथ होतव्यं वातं पुनर्जेत्वा स्मृ धो भस्मनि
...रणात मोहमाप्नोति रिपुः पश्चाद् घृ
ताक्तामासुरीं हुत्वा स्वस्थो भवति वै पुनः ॥ आ
सुरीमर्कसमिधा हुत्वा होतव्यं वातं राजानं
कोपसंयुक्तं वशयेत् ~~[illegible]~~ श्रवणमात्रत ॥
॥ अथ श्रीलगावपणं ॥ आसुरी सुक्ष्म चूर्णेन
सिंदूरमसी प्रकल्प केतरहितां त्रिसमा
भ्यधर्मासाद होतव्यं वातं कनातं जुहुयात

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सप्तदिनं वस्तौ काष्ठे पा ला पा एव निस
शौ चवा मा जा ति वदि सां दा तु र द र ॥
अथ दत्रिन वदूर्णं अ सु सं उ ड स बु
लाँ ड ते र व्यो त र पा तं अ वी वी स प्त
स त्रे गा व पा मा जा ति ते स मा त अ
वै द्य घ वर्णं अ सु रि म र्ति मा र श्री
वा पु स्त क ता ला य क म ग णो श्रु ती द घ्या
भु तं ड वै द्यो त रे पा त वा म पा द स मा
अ स्यः अ टो त रं पा तं तत: स पुा ल घ व पू
मा पा ति र द स ति व लं ध सं अ च पा र दि
व व पं अ सु शं ल व णो पे तां ड न त्त स
पु दि ना व धी अ ष्टो त र पा त नि त्य
व पा पे च्छ द स तं ती अ सु रे पि ष्ट
श्रीं म ति कू पी द र्क व को निं ता वा म
आं द स मा र भ्य सि त्वीं स्त्रो भा वी
सं व ता अ ष्टो त र पा त

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न स्फुटं तद्दर्शनं ज्ञा सुरीहो नेम स
धे.स्व.सुमण्या पुगात॥ 6 ति॥

प्रभव स्य कोऽर्थः॥ प्रभाव स्य वा॥ य
अर्थ है॥ प्रभा अव्यय है॥ नं. लिङ्ग वा. व के शब्द
प्रभव स्यापि॥ ... वृन्द स सर्व कला व्याप क तया
... सप कादि दोष ... थांक
... च॥ यह प्रभु सह व सत ... प्रकीर्य
न ... भाव स्य॥ न संधीतु स थत
... है॥ ... यति ... व ...
... भवतः॥ तिस को प्रभाव
स्या करते है॥ ... का अर्थ॥ ...
क ... व न्तरा ... इस धातु से सिद्ध है भाव
... अव्यय ... है॥ ... न ...
... प्रादुर्भव च॥ पूर्णिमा शब्द स्त्री लिङ्ग
... है॥ ... मास ... माघ या सा पूर्णिमा॥ ...
... पूर्णिपान मु॥ न. वा. शब्द है॥ ...
कुं ... क ... प्रकाशनं ... च
... विधीयते॥ ... मान ब ... त
... है॥ ... अर्थ है॥ ...का अ
... फल ... कर्म सु धीयते ... हो
सा. ... लिङ्ग शब्द है॥ धा धातु से सिद्ध होता है
... कम ... कार्यकाण्ड ... क मकाण्ड
... लिङ्ग वा. शब्द है॥ कर्म सत्य ...
... कर्मकाण्ड का अर्थ है॥ ...
... पद ... मघा ... बिन्दु कर ... य
... भेद॥ ... धा मन ...
... जा ... यते ... इत्युक्त ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त्र.न म ॥ सु सेव्यं ती ति सर्व ॥ न. वा. श्रा. दहे ॥ दुःखम ...
सम्बन्ध सम्भ्रान्दने पातु: अ. वा. चुरादि गण पठित ॥ अस्त्रे व
पुन्म प्रदे ॥ दुःख परिताप से दुःख मु: सर्व ... कूला बेदनी
म. प्र. भाव ॥ सबै सांप्रति कूल वेदनीयं दुःख मु ॥

प्रपत्तिः नाम प्रकर्षेण पद्यते प्रपत्ति ॥ पदं गं प्राप
...प्त्यविन्नैकाजगेणोत्यर्थः ॥ आनुकूल्यस्य संकल्पः
प्रातिकूल्यस्य वर्जनम् ॥ यह प्रपत्ति कातलदीरी
है ॥ षट् प्रकार की प्रपत्ति: शरणागति है ॥ द्विवि
धा प्रपत्ति ... कही है भवाब्धि से तु ग्रंथ मे ॥ स्वा
धा शाणा १ प्रातिपदोक्त रूपा च ॥ षड्विधा प्रपत्तिः य
ह है ॥ आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रातिकूल्यस्य वर्जनम्
रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्व वरणं तथा ॥ आत्म
निक्षेप कार्पण्ये षड्विधा शरणागतिः ॥ तत्रानु
कूल्यस्य संकल्पो यथा ॥ पावदृत्यानन्यानन्य ...
... पास्वाधिकारोक्त ... न सा न्वेव दनमु का ये न वा
... वीतं वदवेति ॥ प्रातिकूल्य ... वर्जनं ... प
र्विदे व स्वाधिकारोक्त नि षेध वि ष यमु यत्नेद
व प्रातिकूल्य मुत स्या ऽप्यि तदा रा ये व ... व
र्जनं यदि द्वा पासुदेवा ऽध्य व सायो रक्षेप: ॥ जो
पृथिवरणं ... प्रार्थना ॥ आत्म ... मा
त्म समर्पणम् ॥ कार्पण्यं प्रकिंचनन्यैव ... तु
पाया ... परि त्याग: ... ॥ अथ प्रपत्ति भेदः ॥
प्रपत्ति भेद प्रपत्ति ल द्वारा भवाब्धि सेतु ग्रंथ जो जा...
मजी का निर्मित है ति समस्साव ... वर्णित है
उस ग्रंथ मे एक पूर्वार्ध है दूसरा उत्तरार्ध है ॥ पू
र्वार्ध मे प्रातःकाल से मनुष्य को कर्तव्य है
सो प्रा ... क कर्म सम्भवणित है ॥ ... उत्तरार्ध मे ३२
प्रपत्ति ... दो ... और ... से ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

एक लक्ष चार वेद हैं तिसमें

[illegible] सहस्त्र वेद के मंत्र कर्म काण्ड के

हैं और १६ सहस्त्र उपासना

के हैं ॥ वेद के ३ कांड हैं उपा

सना काण्ड ज्ञान काण्ड कर्म

काण्ड ॥ तिसमें ८० सहस्त्र

मंत्र कर्म काण्ड के हैं ॥ १६ स

हस्त्र उपासना काण्ड के हैं

४ सहस्त्र मंत्र ज्ञान काण्ड

के हैं और ईसी वास्ते [illegible]

हैं कि यज्ञोपवीत करते हैं जब ब्र

ह्मचर्य में उपासना काण्ड के

मंत्र कौ [illegible] जाता है तब उपनय

न को [illegible] देना ग्रहस्थाश्रम

का धारण देना संन्यास धारण

करना [illegible] ४ [illegible]

मंत्र [illegible] के हैं [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] प्रवेश के हैं

[illegible]

वेद है त्रिपदा गायत्री है इसी [illegible]
तीन तार एक ग्रन्थ के [illegible] करते है ॥
१ ब्रह्मचारी को धारण करना लि
खा है २ दो गृहस्थी वा [illegible] को
लिखा है ॥ यती को नही लिखा है
एक दंडी को ॥ त्रिदण्डी को लिखा
है [illegible] शिखा क्यु के वो ह कर्म क
रता है उपासना करता है इस
वास्ते एक दंडी को त्याग लिखा है
[illegible] का पीस संभवम् ॥ कलि युग है
[illegible] का [illegible] लिखा है ॥ सबका नही लिखा है

वेषका ग्रन्थ [illegible] कामानु [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] नाम वैतवा है ॥ [illegible] नाम ध
र्म का है वी है ॥ [illegible]

मुख्य तो ३ वेद है ४ चौथा तो उपवेद
का भेद है ॥ इसी वास्ते त्रिपदा गायत्री है [illegible]
[illegible] ॥ भूमिका ग्रन्थ भवानी [illegible]
नाम मे ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

... भवे ... उक्तं ...
ह्रीं ... कः कोऽपि कालेन दुर्लभं ...

प्र कृ भुजा भवे त् संध्या साय संध्या चेताव तीति देक
त प्रति भुजा म न्वन्तरे स्थिति रिष्यि तम् ॥ पुन्चेन
द्धिवपे ने हृग्र क्र पातः प्रकीर्तितः एतस्मा ने
न व [illegible] पासंवत्त दे पः स्मृतः ॥ वत्सद
वषा तेना पे विघ्यो रे क मुहूर्त भवेत् ॥ ए
व द्धिवसमाने न घाते वर्षेण तत्र दोषः ॥
ततु द्दे प द्वि जे तो च्छा मिः स्तु दुः स्यप्नु दृ स
च्यतौ ॥ एक माद्धिक मा ने न प्रवा ते वर्ष ॥
तद्धि जाः ॥ स्तु द्र क्वा समा नि ती यता नि स्कु
त निरामयम् ॥ निष्प वं पं जोग द्र वो
च्योमातीतं परं पदम् ॥ तान्नेव दृष्य ने रे
द्रु ख्या सत त्रै वानि ली यते ॥ काल ज्ञा ने
न यो जो यं योगिभि ध्यान कारिभिः ॥
प्र द्रु भिः सदा ध्येयं निरालवं परं पद
इति काल ज्ञानं समाप्तम् ॥ अथ मह
श्री सप्रमाणा मिद्रा स्या दर्शेष्या सच्च
च्छ पञ्च प्रयो द्वा तु र्य्य प्राक हृतं को
रं द्विजोत्तमः ॥१॥ भोजनं हृ त्वा रवा
ज अमि द्रा म थ्या पि वा प्र दत्वा तु नम
पं पथ्या विभव मात्मनः ॥ भिद्रां च
द्धा [illegible] ते मि [illegible] ते [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गतां वा द्विपेत्

तमवाप्नोति ॥ भिक्षुकाभावे चाग्रजेभ्यो द
द्यात् ॥ अज्ञौ वा द्विपेत् ॥ अथ प्रतिपिपृच्छा
प्रियो वा पश्चाद्वा द्वेष्यो मूर्खः पण्डित एव वा
वैश्वदेवे तु संप्राप्ते सोऽतिथिः स्वर्गसंक्र
मः ॥ आचारादर्शे तिं० ॥ अथ दानविधिर्माह
॥ वृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्रे अ० ८ पत्र ११६ ॥
दातव्यं नाम किं ॥ स्वं स्वं निवर्त्त्य विपूर्वकं परस्व
त्वोत्पादनं दानम् ॥ दानानि विधिना सार्द्धं ज
नौ कुर्वीत विपराशरः ॥ आत्मस्वत्वानि वस्तूनि अर्पयताम्
जैस्वकर्माः ॥ १ ॥ दानेन प्राप्यते स्वर्गः सुखं दानेन
लभ्यते हिताप्सु यशं दानेन पूज्यो भवति मानवः ॥ २ ॥
नदीनां सागरो धर्मश्चिद्रलोके प्रविधीयते ॥ तस्मा
द्दानं प्रयत्नं पुण्यकार्यस्तथा सदा नरः ॥ ३ ॥ अन्नदानं
कोऽभिलक्षितमित्यात्मात्रोपजीविनः तो पात्रं न वयं
निर्निकि धनैः सा नरगतिः ॥ ४ ॥ न दानं पात्रसंद
वृश्यपात्रो पकार्यते न नरजीवतश्शीलेभ्यो हि
श्रीकेभ्यश्च धार्मिके ॥ पात्रभूतोऽपि यो विप्रः प्रति
गृह्य प्रतिग्रहं ॥ असत्सु विनियुञ्जीत तस्मै देयं
न तद्भवेत् ॥ २ ॥ संचयं कुरुते यस्तु समादाय ततो
प्रीतः स्वयं नोपभुंजीत न तं तस्करमर्पयेत् ॥
३ पश्येदसाद्धिं ज्ञावस्था दुस्सीं कुरुते नरः ॥ तान्
वृद्धिसंवितुं जलमध्ये जलं क्षिपेत् ४ ॥ पात्रे
नित्यं दानं ... ण व तदभिलक्षितम् ॥ अथ
कालेन ... पेत् ॥ ५ ॥ दा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

च संप्राप्ते पात्रे चासान्निध्यौ गतः प्र्याविप्रक
दत्वा दानं पात्राय दीयते ॥८॥ सद्दी [illegible] यच
तं दरिद्र पोषिने द्विजाः तद्दे [illegible] स [illegible]
मिति पाराशरो [illegible] देद ॥१॥ दीयते यद्
[illegible] ८॥ प्रयाङ [illegible]
पत [illegible] प्यकुर्द्विने
दपानि दानानि फलानि चैतत्वानि फ
अन्मानि यथाव चैनि बोधतः ॥१॥ वे
पाजन्मानि चत्वारि यथादनानि षोडशः
तानि पृथक्पृथक् प्रवक्ष्यामि निबोधत [illegible] द्विजा [illegible]
प्रभुत स्य वक्ष्या जन्म येच धर्म वर्ही कृताः दरि
द्र स्य वक्ष्या जन्म व्याधितस्यापि निष्फलम्
प्रभु [illegible] स्याने यद [illegible] तदुच्यते ॥ [illegible]
पतितेचे [illegible] पाजितं च [illegible] ॥ यच्च [illegible]
ले दानं पतितेत स्कर [illegible] वज [illegible] फलानि [illegible]
के कत चौर्य प्रपाण के [illegible] फल वर्यो वे
पद्दते [illegible] पतौ वैद वि [illegible] वैव प
चोपकार्तजं है इ॥ [illegible] तचैव पद्द त्वयात्
हे [illegible] निष्फलम् ॥ परचार वोपि वेपदते
वक्ष्या दानानि षोडशः १६ ॥१॥ तमो [illegible]
दद्यात् पात्रं कोधा [illegible] नव: विप्र दानं हि ते
हा वे [illegible] गर्भस्य रक्षि ८ [illegible]
दानं च [illegible] मर्थकार [illegible] यो ददाति द्विजा
[illegible] भावेत द्दयते ॥८॥ प्र० ८ प० २३
[illegible] १२८ [illegible] चपा संघ्यात [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पात्रविनोदकं ॥ असंख्यातं चयप्रवृत्तं ज्जप्यं तत्स
र्वं निष्फलं भवेत् ॥ इति दानविधिः ॥ अथ
पात्राणां शुद्धिः ॥ ओं० दीप पत्र ११६ कांस्यं च भस्म
ना शुध्ये मेध्य मांस विवर्जितम् सुरा मूत्रे
पुरीषेस्तु शुध्यते तापलेपनैः ॥१॥ [illegible] ति पूप
घृत बौद्धे स्तां म्र मम्लेन शुध्यते ॥ स्त्र
स्त्री मनो दुष्टा नद्यश्च वेग संयुता ॥२॥
सत्येन पूयते वाणी धर्मः सत्येन वर्द्धते
३ ॥ इति पात्र शुद्धिः ॥ अथ सप्तविधस्नाना
न्याह ॥ मंत्रं पार्थिव माग्नेयं वायव्यं दि
व्य मेव च वारुणं मानसं चेति सप्त स्नाना
न्यकामात् ॥१॥ शन्न आपस्तु वै मंत्रं स्यात्
मृत्पार्थिवं भस्मना स्नानमाग्नेयं गवां रे
णु भिरानिलम् ॥ आतपे सति या वृष्टि
र्दिव्यं स्नानं प्रचक्षते ॥ वहिर्नद्यादिके
स्नानं वारुणं तत्प्रकीर्तितम् ॥ यद्ध्याने
न साविष्णो मानसं कथ्यते बुधैः ॥४॥
अथ सामर्थ्येन कायस्य कालसत्याद्युपे
क्षया सर्वाणी फलं तुल्यानि स्युर्यथाक्र
परापरः ॥ इति सप्तविधस्नानानि ॥
आदिपुराण में लिखा है ॥ काश्यादयो धातवोऽस्प
र्शे केवले न जलेन शुध्यन्ति ॥ विष्णु न स्पृते
कारण [illegible] दे प्र
क्रम दिया [illegible] है यह ॥ मन्त्र [illegible] में भी [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नः दानेविधिमाह ॥ दानमध्ये प्रथमं ॥ प्रथमंतु ग
तीर्थं देवा ब्रोष्ठ मंत्र त्रामात ॥ ततोऽन्ये बांधवा
मुखाद्याज्ञानं सारतः ॥१॥ दानं चेद्धि कार्य
सिप ॥ प्रदीप्ते गृहे पद्दनं तत्सर्वं निष्फलं
भवेत् ॥ … पात्र मदाहीणम् इलपि ॥ नतीर्थ
… मात्राभावैः वेदयोतैरपि प … दानम
प्रति … है ॥ प्रथमदानेपात्रविचारः ॥ सम
प्रपमे लिं०है
मब्राह्मणो दानमु द्विगुणं ब्राह्मणे बुवे सह
स्त्रगुणं मा चार्ये चैन्तं वेदपारगे ॥ जैल
बीजं समुत्पन्नो मंत्र संस्कार वर्जितः ॥ जा
ति मात्रोपजीवी च भवेद्ब्राह्मणः सतु ॥ ३॥
गर्भाधानादिभिर्युक्तः सम्योपनयनेन च नक
र्मकृन्नैः नाधीते भवेद्वो ब्राह्मणः ब्रु …
प … दानमध्ये … ॥ प्रमाण …
दानदानेषु पात्रमेवविचारयेत् ॥ …
तापं प्रदद्यादेव … ॥ वस्त्ररहिताय वस्त्रं दद्य
मिति ॥ अन्नके वस्त्र के दान में पात्र को विच
र नहि करना ॥ क्षुधार्त को अन्न ॥ वस्त्ररहि
त को वस्त्र देना पात्र विचार नहीं करना
॥ कुरुक्षेत्रे प्रतिग्राही नमस्यः पुरुषो भ
वेत् ॥ तीर्थवासी ब्राह्मण को दोष नहीं है ॥ अन्य
तीर्थवासी को दोष नहीं ॥
को है ॥ पर्व समये प्रसस्त प्रतिग्राही ॥ पर्व दो
षरहित काले स प्रतिग्राही न दोषभाग्भ
वेत् ॥ प्रति नं … शय्यां च मे बीयो भयतो
… कुरुक्षेत्रे … नमस्यः पुरुषो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

भवेत्॥ मनुरप्याह॥ हिरण्यं भूमिमश्वं गामन्नं वासः
स्तिलान् घृतं अविद्वान् प्रतिगृह्णानो भस्मीभ
वति काष्ठवत्॥ १॥ अविद्वान् नाम विद्यातपोभ्यां
हीनः॥ तेन न ग्राह्यम्॥ वाक्यं चेदं नैवेद्य कार्यं
॥ जलमध्ये दीयते दानं तस्य ग्राही न गौ भवति॥
दाता च नरकं याति तस्याहं कुलवालकी॥ १॥
तपस्तप्त्वासृजद्ब्रह्मा ब्राह्मणान्वेदगुप्तये तृप्त्य
र्थं पितृदेवानां धर्मसंरक्षणाय चेति॥ अस्य
टीका॥ ब्रह्मा हिरण्यगर्भः कल्पादौ तपसा लो
ध्यानं कृत्वा कोऽहं रक्षां नु सृजामि इति पूर्वं
ब्राह्मणान् सृष्टवान्॥ किमर्थं वेदगुप्तये॥
वेदरक्षणार्थं पितृणां देवानां च तृप्त्यर्थं अ
न्यजनोपदेशद्वारेण धर्मरक्षणार्थं च॥
अतस्तेभ्यो दत्तं अक्षयफलं भवतीत्यभि
प्रायम्॥ सर्वस्य प्रभवो विप्राः श्रुताध्ययन
शालिनः तेभ्यः क्रियापराः श्रेष्ठाः तेभ्योप्यध्यात्म
वित्तमाः॥ अस्य टीका॥ सर्वस्य द्वात्रिपादे विप्राः
प्रभवः श्रेष्ठाः ज्योत्याकर्मणा च॥ ब्राह्मणेष्व
पि श्रुताध्ययनशालिनः॥ तेभ्योपि क्रिया
पराः श्रेष्ठाः तेभ्योपि अध्यात्मवित्तमाः ब्रह्म
ज्ञानमार्गेण समदमादियोगेन आत्मतत्त्व॥
ज्ञाननिरताः श्रेष्ठाः इत्युच्यते॥ जातिमात्र
ल हिरण्यादि पात्रे दातव्यमन्यथा तमुनापात्रे
विद्यमाने किंचिद्दातृणः श्रेयं इद्भवति॥
अदेशे काले यद्दानं अपात्रेभ्यश्च दीयते
असत्कृतं अवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अपात्रेन न दातव्यं ॥ अधर्मसंयुक्ताय न दद्यात् ॥
अपात्रे दातुर्निषेधं उक्ता प्रतिग्रहीतारं प्रत्या
ह ॥ विद्यातपोभ्यां हीनेन न तु ग्राह्यः प्रतिग्र
हः ॥ अदातारं मद्यो न पत्यात्मानमेव चे
ति ॥ अत्र पात्रापि सर्वगुण सम्पन्नाय गुरु
वे पुरोहिताय वा दद्यात् ॥ यह वाक्य पाराशे
र के मिताक्षरा के है ॥ अध्याय प्रथम मे
दानस्य चौविध्यमाह ॥ सात्विकं ॥ राजसमु
तामसं चेति ॥ तेषां लक्षणानि गीतासु
सम्यक् प्रतिपादितानि ॥ अन्यत्र
श्राद्धं वा साम्य पः पु जपं तो मं प्रति अर्ह
सं वंत द्वासं विधा द्वि जो न त्रे य
कृतम् ॥ पात्र वत्क सन्तौ ब्यास भाष्य
संध्या भाष्ये पिउक्तम् ॥ विधिहीनस्य
पात्रस्य सद्यः कर्ता विनश्यति तद्यथा
धिपर्वं मैत्रा तु रेभः संभाव्यते ॥ यह वा
क्य वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड का है ॥
सर्ग ८ श्लो० १८ ॥ अथ व्रतपरिभाषा ॥ तत्र
स्त्री शूद्राणामुद्धि रात्रा धिको पवासे ना
धिकारः ॥ स्त्रीणामपि भर्तुरनुज्ञां विना व्रतो
पवासादौ नाधिकारः ॥ पत्यौ जीवति या नारी उप
व्रतमाचरेत् आयुष्यं हरते भर्तुः नरकं चैव गच्छ
ति ॥ यह वाक्य धर्मसिन्धु का है प० १ समर्तुकाए
नारी स्त्रियां विना वाधिकारः यह वाक्य व्रतोद्यापन
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
नको मुद्दी का है ॥ अथ एक व्रतानि द्वि

प्रमा दामहारो लोभाद्रूपाय तज्ज्ञ याऽपयो वो व्र
तमन्यथा कुर्यात् मम द्रोही न संशयः ॥ २ ॥ जितेन्द्रि
याद् पापानां कदाचिन्न्निकृति रेव ल मम द्रो
हो जितपापं न्निकृति नैव संशयः ॥ २ ॥ मतं
पुनः पापानां षड्पद्धी कृष्णतेऽनां जितो
दीनां षट्व स्वरेउ एष्यत् प्रथम यादी नोग्य
न्यादी नां मद्रवृद्धि माह ॥ एतादी रसा
नां वृद्धि माह ॥ मोष मे षड्पापं स्त्रै ए मासु
षष्ठि पापा विकं संधि न्यान दृष्टा व्र जीव
पक्ष पार वर्जयेत् ॥ प्रथटीका ॥ संधि
नो षाव व ए षधापते सोसंधि नो व षा वे
धयो विनों पतेवर्धमाना तो च संधिनी ॥ वे
द्धि कास्त्रि कोटि चि मसर एता ॥ पावको वे
लोपन्ति कम्प द्वे ते पाच बलं मं वर्धि स्यसं
धीपते सासंधिवी ॥ विस्तारमते का तते द्व
ता सा तन्नि दृशा ॥ एत वलाः मवलासंधिनो
चे मनि दृशा वन्नलाच संधि न्यः मे दृश
व ला ता स्वला जा व श्र ता सा पय ॥ वीर पारि
वर्जयेत् ॥ एवं मजा मर्हि च र निं दृशायो
पयः परिवर्जयेत् ॥ उक्त जात मोक्षम
पापो मध्ये न्या दि तावि श पा वड वा दय त तेस
मवरे का मफ ॥ त्रिभ व स्त्रे ए त्री ग्र ह ए
म जाव्यतिग व स व त ह्रिस नि नाम्पच
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
चा ए ॥ मि स नो सोद्धि सा नी ने वीरं म ये

र्यं ॥ प्रजा वज्जी भातिपांखवस्मरणं तु ॥ प्रार
प्पेभवा ॥ प्रारभ्या स्नदीपमारणपवं मुद्रीर
गृहि व्याप्ति वेरा ॥ प्रारणपानां च सर्वे श्री म
णां मार्गे पिवीनां इति वचनात ॥ प्रवेजीत
प्राविके वज्जे पेत इति प्रश्ने कं स्वं वध्यते ॥ मिता द्व
रापाम्भुम ॥ प्रध्यो ॥ तिः ॥ मद्यभदपप्रकरणे ॥
कृतिभस्मा ऽ म द्या प्रकृति ॥ इतनो द्रव्यशु द्धि
माह ॥ सौवर्णराजताज्जानां उर्द्ध पात्र ग्रह णा श्मनां
शाकरज्जु मूलफलवासो विदलचर्मणां १ ॥ प्रथ टीका
पात्राणां चैवसर्वेषां वारिणा शुद्धिरिष्यते ॥ सौवर्ण
स्वर्णेन कृतं ॥ रजतकृतम्रु राजतम् ॥ प्रज्वं मुक्तापाल
कं खद्युक्तादि ॥ उर्द्ध पात्रं ऊर्ध्व खलादि यात्रे
खलादि ग्रहणे स्नाहचर्पात ग्रहाः षोडशिमद्ध
तपः प्रप्रमाहि बसरि पथर ॥ प्रादि ॥ शंकं बुसुक्ता
दि ॥ रज्जु वर्तल आदि ॥ निमित्तास्त्रलमोद कार्यं फल
॥ प्रादि ॥ वासो वस्त्रं ॥ विदलम्रवेण वादि ॥ चे
प्रजादीनां विदल चर्मणोप्रहरणाम्रुत दोवि
कारातां द्धु गुच वर ग्रादिना उपल द्योणं वंप
त्रा णी प्रोद्धणी पात्र प्रभृतीनी ॥ चर्म सा हो ह चर्म
सादपः एतेषां सौवर्णादीनां लेपरहितानां उ
च्छिष्ट स्पर्शने वारिणा प्रचालनेन शुद्धि
॥ मार्जारश्च व दर्वीचे [illegible] मारुतश्च सदा शु
चि इति मनुस्मरणात ॥ मार्जारबीला ॥ दर्वीना
मकडछि ॥ प्रौर पवन यह सदा शुद्ध है ॥ प्रौर
कौशेय कुतुप पट्ट चौम दुकूलजाः ॥ प्रल्पशौ
चाभवंत्येते शोषणप्रोक्षणादिभिः ॥ रेशमी व
स्त्री सूवन रजतवा शोखवा का ॥ [illegible] ॥ [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शुद्धि है ॥ ऊर्णा वातेन शुध्यति पहवी बावपत्ति
खा है ॥ कारुहस्त शुचिः पण्यं भैक्ष्यं योषि
मुखं तथा ॥ अथ टीका ॥ कारवो रजक चैल ॥
कावकास् पकाराद्या तेषां हस्तः शुचिः ॥ का
रु शिल्पिवर ॥ रजक धोबी ॥ धावे का हलवारा ॥ सू
पकार रसोइया रोटी करनेवाला इन के हस्त
पवित्र लिखे है ॥ शुचिर्वे तैत्तिरीय कर्म
णो वै स्त्रियो वनादौ सततं कादि संभवे पि
॥ अथापद्यस्य प्यंतरम् ॥ कारवः शिल्पिनो वै
द्यो दासीदासास्तथैव च राजानो राजभृत्या
श्च सद्यः शौचाः प्रकीर्तिताः ॥ १ पण्यं पण्याई
विक्रेयं पण्य वीथ्या धनेन क्रीतं सन्न वि
रुपफलरूष्यादिकं तदप्रयत नभवति स्त
तक्रियोनिमित्तेव ॥ वणिजां प्रसारणस्य
हे भैक्ष्यं तद्ब्रह्मचर्यादिगतमन्नार्थानि ॥
स्त्री प्रदानात् शुचिः ॥ रथ्याकर्मणाद्दिनोपि
दृष्यति ॥ योषिन्मुखम् संभोगकाले शुचिः
स्वभार्या मुखं संभोगकाले शुचिः न तु परस्त्री
मुखं ॥ त्रिपक्ष रति संसर्गः इति स्मरणात्
इदानीं मृच्छुद्धिमाह ॥ मृच्छुद्धिमार्जना
दाहात्कालाद्गोक्रमणात्तथा सेकादुल्लेखना
ल्लेपात् ॥ उत्ह वमार्जनेलेपनादिति
अथ टीका ॥ मार्जन्या पांशु त्याग दिनों प्रोस

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

13

ण.मा जीर्णं दाहदहनं काष्ठाग्निधौ॥ कालोया
न्तता कालेन लेपादिद्वायोभवति एते मी जीर्णा
दिभिः॥ जाक्रमणाजवां पादपरी
नम्॥ संवेद्वीर गोमूत्रेजोमयवारि
भिःप्रवर्षणं वा॥ उल्लेखनम्॥ तच्चाणां
खननं वा॥ लेपो जोमयादिभिः एते मी
र्जनादिभिः सम्मसो: व्यसोवी मेध्यादुष्टा
मलिनो वा भूमिः शुध्यति॥ तथाच देवलः
॥ पञ्चप्रसरूपते नारीमित्रियते दह्यते प्पि वा या
ऽडानाध्युषितं यत्र पत्र विष्ठादिसंगता॥
एवं कश्मलं भूयिष्ठा भूरमेध्या प्रकीर्तिता॥ अम
ता:॥ अमेध्या नामदुष्टा अशुद्धा प्रकीर्तिता॥ श्व
सूकर खरोष्ट्राणां संस्पृष्टादुष्टतं जनेत॥
प्रकारतु सकं बा गष्टि भस्माद्यैमैलिनाभ
वेत॥ इति प्रमेध्यादुष्टा मलिना इति॥ एत
ध्य भूमेस्त्रैविध्यमभिधाय शुद्धिविभाग
दर्शयति॥ पत्रैधा वा चतुर्धा वा भूरमेध्या
विशुध्यति॥ दुष्टा त्रिता त्रिधा द्वेधा शुध्यते॥
मलिना एकधाप्नोति॥ पत्र मनुष्याद हे
पत्र चाण्डाल: अध्युषितं भवति तच्चा: पं
चभिः॥ दहन॥ का लो॥ जाक्रमण॥ सेको॥ लेख
नै: शुद्धि॥ पत्र मनुष्या जायन्ते म्रियंते तत्र
मन्तविष्ठादि सङ्गतिस्तत्र दहन वर्जितै

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

से रवचतुर्भिः शुद्धिः ॥ श्व सूकर रवरोष्ट्र
र काल मध्युषिता या: जो के मरग रवे कौ
लिखने विधि ॥ ऊष्ट्र नाम कुंकुट द
दि भिश्चिर काल मधिवासिता या: से
को लिखना प्रांशुद्धिः ॥ माठी नोन लेप
ने तु सर्वं नसम चौपते ॥ एवं उहं मा
जीन लेपना प्रांशुध्यति ॥ केश मार्चीका
कीटे दूषिता न प्रभोज्यम् ॥ भस्म ना
शुध्यंत कांश्यं ताम्रम म्लेन च शुध्यति ॥ अ
पर्के कांश्य तोय भस्म ना शुध्यति ॥ मत
स्यादेवसा विधा मातवं मूत्र रेतसो म
ज्ञा नेसु शाण्डि तस्य च्छुर्ता परस्परा स्नानमाचु
रु ॥ प्रवि जात पृ कृत्तौ पं प्रकृतिस्य
महि गतं मूत्र यामां से श्वचाण्डाल के व्याधा
दि निपाति तम् ॥ अपटीका ॥ मही गतं मू
त्रिस्यं उदकं एवं गवित पृ जनन सम
चै चाण्डा लादि भिः रसस्य वं प्रकृतिस्थं ॥
रूप रस गंध स्पर्श तुरमना पन्ने शु
चि: माचमनादि का उपं भवति ॥ एकरा
त्रौ षित न मापः साञ्या: ॥ एकरात्रि का धरा
हुवा जल न भव दुहु जाता है ॥ चाण्डाला
दिकने रुहजादो न दोष: ॥ अन्नेरपि कृ
दिकृ ने ... ते कूपसंता ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रजा रजः स्वर रज प्रजा संज्ञा ज्री रजः स्वरूपा दीपक योद्दर्श पाठेती
[illegible] उल्प दिवी कंतम्
चपि लो. च माप क्तितं न विद्यते ॥ तथा मां संक्र
चोगत्ता रुक्ष्यादि जितिं पातितं शुचिः ॥ ॥
र श्री रज जैन रजः छा पाजो रक्षो वस्त्र पानि
नः । विपर्षा मादि का स्पर्श वस प्रजा वर्णा
शुचिः ॥ स्वरूपः स्पर्शे दे ःप्रका शद्र ब्यास्य
प्रतिष्ठ सिद्धुः ॥ रजो प्रजादि संबंध धन्य
ति रवे रण प्रजन्य्त्वि ॥ तत्र प्रकाको सः खरो लः
के स्परुकर जाम्प पावितणी प्रजाविरणु सें
स्पर्शो दाद्युतं छीः प्रतियतं ॥ इति दोष प्र
वर्णात् संज्ञा जे नादि कार्प्प मु ॥ छापा
द्वारे ॥ जो ॥ प्रश्न ॥ वसुधा च च्यी भूमि ॥
भानि लो वायुः ॥ विप्रषो वस्त्रापविन्दवः ॥ ॥
प्रखजोनो वे दपाण्णलात् ॥ भूतिकान्य र
ते चाण्डालादि स्पर्शा ऽपि शुद्ध वसुः ॥ सुजो
भवन्ति ॥ वसुः प्रश्न वर्ण ऊर्जगतद्धं प्रथा
षिरा शुचिः वसु गृह गावाल स्पो पथ
णापैय ॥ प्रजा पक्षं प्रखतो मैथ्थमु ॥ प्रजा
प्रोर प्रश्न घाडे काम खद्या जु है ॥ नगोर
रजाम ला ॥ जो काम ख शद्र नहीं है प्रोर
[illegible] ॥ पंचाने प्रावि
शु धंति सो मरुस्पर्शारु मारुतेः ॥ प्रश्न
टीका ॥ प्रजा यपो प्रसं मैथ्थं ऊर्जमु ॥ नगोर खं ॥
न नरजा मलाः नर शद्रो पल चाण्या ॥ देह म
मिचले तज्जा मलाः वसार्युयो मैथ्थानि भवन्ति
प्रजा कैभवन्ति ॥ नर की देह से जो उत्पन्न उप मल
मादि वो है सुद्ध नहीं तहे ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham.

पंचा नो माजी : बाह्य ला दि स्पष्टा पि रात्रौ सो भं भ्रमि
मार ते : मणुष्यानि ॥ दिवा चास्य भ्रमि मार ते
न भ्रमंति ॥ इति प्रदिः प्रेके रणे मु ॥ अङ्गुली
दन्त काष्ठं च प्रपच्चे ल वर्णे र चा म तिका
म द्यं वै व तु त्यं जो मार सु भ ची एए मु ॥ प
ह चा वेय अति स्त तिका है ॥ ल व ग नू र के
वल स्वाली म द्य र न हि कर एगा को सिव
सु के म ल मे स्वा रस्ता ॥ म तिका न ही मद्य
ए कर णी ॥ खाली अङ्गुली से द तु धा व न न
हि करनी जो करे तो जा नो एकी तुल्य से म लग
ता है ॥ जहो द्द छोग रण कूप कूपा दश ग र ण ते
वत्सरा द्द रागत हं न धी जं जो स स्नान विधु
ते ॥ पं द वो काची अति सुपति का है ॥ म न ॰ अ॰
श्लो॰ ११८ राजा नं तेज आद ते रु द्र
लं प्रल वर्च स आयुः छू व ली का रान्
पशु ब्रज्मा ब्र कर्ति न ॥ टीका राजा ने तेजो आ
दके ना श पति ॥ का द का नं प्रजा हु ति ॥ व लं सि
जक र प्रच ॥ ज र्णे ने र लि का प्र नं लो के
परि का तहै ॥ लो के प्रल ... प्रा प्त न
ति ॥ ... ॥ नाति क्यु व द नि ... देव ता नं ... कु
द्द ब द म च मा न चे को घ ते चां च व र्जं
... चम व का र पित रं मा त रं ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ॐ जंघा ॥ नकुलस्पच केकोय वं
न्स्च मपवेलिस वैलां १पंचग व्यंपावेत् ॥ २
प्रपचविल्स आदि चैषितकूपादि जलेप
प्रायश्चित्तम् ॥ कूपे विल्स नस पके
पीत्वातो यद्वि जीत मेः त्रिरात्रेण विशुध्येत्
कुंभे सांतपनं कृच्छ्रं स्मृतम् ॥ १ ॥ द्वंद्वे
ब्राह्मणः ज्ञानातुर्ख्नृ गुणम् ॥ सांतपनमा
प्यमे हनिनाछोयो जोमहे आशोत हः परम्
तीये जोमपाश्वीस्या चेतत् चौर पोभवेत्
चमदधि मकुचेव घृतंषष्ठे पिबेत्तः ॥
कुशोदकं समिश्रितं कृच्छ्रं सांतपनो विधिः ॥
प्रानि देशाया जो द्वीरं मो प ॥
प्राविके स्पिनी चौर विप्रला ब्राः
जापयः प्राः एषाणं व सर्वा होम
ज्ञानां माहिपी वो ना प्रपेपा ति
द्विजातीनां सदैव हि ॥ शंख सर्वा सांद्वि
स्तनी नां चौर मवेपसु प्रजा व जामि ति
प्रप्य वा ल प्रायश्चित्तम् ॥ चर सांद्वि जानां
सावित्री न करोति यथाविधिः तो चौरपि
त्वाचीनकृष्णे यथाविधिस्नाप पेत् ॥
वास्यवे पञ्च दशान्वर्षीत्परम् ॥ पतिता पत्य
वित्री दशा वे वर्षाणि पंच चत्वारो पाश्रितं भवे तेषां

15

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रोवाचेवध दतो वरः ॥१॥ प्रायश्चित्तकदम्बेति ॥ प्रायः॥
संस्कारहीनः पतितसावित्रिकः ॥ ब्रह्मवत ॥॥
श्राद्धदिने अपुनेर्द्रव्यकमणो जनं प्रायश्चित्तम्
॥ रजस्वलागमनमाह ॥ त्रिरात्रान्ते घृतं प्रा
श्य पञ्चगव्योदकं श्चिर्भवेत् ॥ त्रिरात्राघातौ
चत् विंशति पणान् दद्या ॥ लेतकामतः ॥
॥ असत्य भाषणे ॥ किंचिद सत्यभाषणे कृ
ष्णान स्मरणं प्रायश्चित्तम् ॥ विष्णुपुराणे
पि ॥ कृते पापेनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते
प्रायश्चित्तं तु तस्यैव कृष्णानुस्मरणं परम्
॥ यह भी प्रायश्चित्तकदम्बका है ॥ पञ्चांग वा पिवे
द्... ब्राह्मणे सुरां पिबेत् उभौ तौ तुल्य
कर्माणौ प्रमारबोनरके प्रजेत् ॥१॥ इत्युक्
त मतो भवेति ॥ पंचवर्षों का के घसतु जह्न
द्रुहि जातो नरः स एव उनरे पातः उनः
संस्कारमहीति ॥१॥ मनुस्मृति मे पहला क्य
॥ प्र०४ चतुर्थ में श्लो० २२० में लिखा है कि वैं
द्य का अन्न नहीं खाणा ॥ उतके चरूप चि
कित्सकस्यान्नं पुंश्चल्याः स्त्वन्नमिन्द्रि
यं विष्ठा वार्धुषिकस्यान्नं शस्त्रविक्र
यिणो मलम् ॥ अर्थ चिकित्सक का अ
न्न नहीं खाणा ॥ और पुंश्चली का व्यभिचारि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राम मध्येन भोजनं पात्र | खट्वारूढस्यादीना उपविश्य नौ मुनि लिखे
प्र जा न संधयेत् इति मनुः | लुप जौ वी कहे

शिवका प्रश्न और रुद्रं प्रभु नें जो पद
ह वर्जि देणा ॥ वाधेषि के का प्रश्न ॥ धार स्वे
के वे चरणो भालेवका प्रश्न नहीं खाणा
॥ न भाव दुःखं प्रश्नो पात् ॥ पत्र मनः प्र
सादे नभे वति सभाव दुःखे मुनी भी पातु ॥
खट्वारूढो न भुंजीत न चोत्तानं के दाचन ॥
हसा श्च रूप पानोष्ठ प्रसाद स्थो न प्र
चापेत् ॥ श्मशानाभ्यन्तर गतो देवालय
गतो पि वा शयनस्थो न भुंजीत पाणौ न
स्थं न चासने न संध्या कालेषु मध्याह्ने नाद्रे
रात्रे के दाचने ति ॥ नाद्रे वासा नार्द्र शिरा
न वे प्रयज्ञोपवीतवान् ॥ न प्रसारित पाद
तु ॥ न वेष्टित शिरा ॥ न दान्तो न च खोमदा
येत् ॥ वाक्या निद्रा चारा दर्शाति ॥ १५०८३
मनुधारावत्कि
ऽ[illegible] ऽप्रणतिनातोपं नपिबेत्
शिर पर पगडी या हपटा को धक भोजनें
नहीं करणा ॥ ऽप्रं गलितेऊंजते सेजलन
हि पानें करणा ॥ यो वेष्टित शिरा भुंके यो भुंके द
क्षिणा मुखः वामपाद करं न्यस्य तस्य रात्रो स
भो जनं तु १ पत्र वा वचना वापणा सारसंयत हुए
पका है ॥ वरशास्त्रो धानेऽह पानानि वर्जयेत्
॥ ऽप्रदत्ता न्यन्निहि न स्पनान्न मधासना पदि
॥ ऽप्रपदी का ॥ पर शय्या ऽप्रासनं ॥ ऊधा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ं॰प्रास्त्रवनाद्दि॥ जटं प्रसिद्धं ॥पानेरघा॰
दि॥ परसंवंधिन एतानि॰ प्रदत्तानि॰ प्र
ज्ञातानि वर्जयेत् नोप भुंजीत ॥ अथाऽऽ
पद्यपि तु अन्नात्॰ भाह॥ अपि हीन स्यति ॥प्र
ज्ञो हि ने स्वयंज्ञोत स्मातीन्याधि कोशीर हितस्य
ज्ञोत स्मातीन्य सं॰धि कार रहितः॥ ररहदं स्वम
तिलम ज्ञप्य वे — प्राधिकार वतो॰
[illegible] वर्जित रहितस्य अन्नं न भुंजीत
नस्यति रहीयात ॥२॥ कदर्य वद्धचौर स
र्गो लीवरंगावतारि रंग वेरणऽपि
शस्त्र वाधुकम गाणि काजण दीक्षि
तज र अप हीवा॥ कदर्यो लुब्धः प्राप्त
नेपि धनेऽपि स्वपुत्रदारादीन पीडयेत्
तेषामाचपितसौस्थ्यान् कदर्यः इति
स्मृतः॥ वद्धो निगडादिना वाचा संरु
द्धश्च॥ चौरो ब्राह्मणस्य वर्णाव्यतिरिक्त
परस्वापहारि॥ क्लीबो नपुंसकः॥ रंगा
वतारि नटः चारण मल्लादिः॥ वेण छेद
जीवो वैणः॥ अभिशस्तः पतनीयैः क र्म
भिरभियुक्तः॥ वार्धुषी नि षिद्धवस्तुप
जीवी॥ गणी का॥ गणदीक्षी बहु याज
कः एतेषां अन्नं न भोजयेत्॥ जाभं जा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ना॥ त्रिवीतस्य चातुरक्तः क्रव्यंप्रसूती मत्त वि
द्वां चारोग्य पत्तु मायदांभिको द्विष्ट
योजिनां ॥ अथ टीका ॥ चिकित्साको अव
के वसु पजीवी वैद्य का नाम है तिसका अन्न
नहिं खाना ॥ आतुरे महारोगे पस्पष्टः ॥ म
हारोगान्याह ॥ वातव्याध्यश्मरी कुष्ठ म
हो दर भगंदरा ॥ अर्शांसि ग्रहणी चेत्यष्टौ
महारोगाः प्रकीर्तिताः ॥ कुंडगोलकः पित ॥ अमल
जाम वाणिज्ये ॥ मत्तो विद्यादिना गर्वितः ॥ विद्वि
ष्टः शत्रुः ॥ कुरोष्ठ लोभ्य नर कोपः ॥ वाकाय व्यो
मारे सो है जे ऊग्र ॥ पतितो ब्रह्महादि ॥ व्रा
त्यः संस्कार हीनः पतितसावित्रिकः ॥
दांभिको वंचकः ॥ उच्छिष्ट भोजी पृष्ठ
तु अकाजितः शूंगो ॥ एते चिकित्सका
दीनं अन्नं नाद्यात् ॥ अथ वीरा
स्त्री स्वर्णकार स्त्री जीत
ग्राम याजिनां शस्त्र विक्रय धीवक मारत
तवाक्षक तिनां ॥ अथ टीका ॥ वीरा स्त्री
स्वतंत्रा व्यभिचार में तत्पर पतिव्रता र
हिता ॥ स्वर्णकारः स्वर्ण विकारात्ते कृ
त ॥ स्त्री जितस्य स्त्री वशवर्ती ॥ ग्रा
म याजी ग्राम प्रयाज्याद् के ती वर्ज
उपनीता ॥ ग्राम याजक नाम पाहो का है

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शस्त्रविक्रयी शस्त्रविक्रयोपजीवी ॥ कर्मारो ॥
लोहकारः ॥ तन्त्रादीक्ष्त तन्तुवायः जुलाहा ॥
सूचिकारः सूचिशिल्पोपजीवी ॥ श्वभिर्वृ
त्तं जीवनमस्यास्तीति श्ववृत्तिः चाण्डालः ए
तेषां प्रत्ननाश्नीयात ॥ नृशंस राजे रजकः
कृतघ्नवधजीवीनां चैलधाव सुराजीव स
होपपतिवेश्मनां पिशुनानृतिकोव तथा
चाक्रिके वंदीनां एषामन्नं नभोक्तव्यं सो
मविक्रयिणस्तथा ॥१॥ टीका ॥ निर्दयो नृशं
सः ॥ राजा भूपतिः ॥ त साह चर्म्मी सुरोहितश्च ॥
रजको वस्त्रादीनां नीलादिरङ्कारः ॥ कृत
घ्नः उपकृतस्य हन्ता वधजीवी प्राणिनामुं वध
नेन वधेन वर्तकः ॥ चैलधावो वस्त्रनिर्णेज
कः ॥ प्रसुराजीवो मद्यविक्रयी ॥ उपपति
जारः ॥ सहोपपतिना वेश्म यस्यासौ सहोप
पतिवेश्मा ॥ पिशुनः परदोषस्य प्रकाशकः
चुगलीकरनेवाला ॥ अनृति मिथ्यावादी
॥ चाक्रिक सौलिकः ॥ बंदिन स्तावकाः ॥ सो
मविक्रयी सोमलतायाः विक्रेता ॥ एतेषां प्र
त्नं नाश्नीयात् ॥ नभोक्तव्यम् ॥ शूद्रेषु दा
सगोपालः कुलमित्रार्द्धसीरिणः । भोज्या
न्ना नापितश्चैव यश्चात्मानं निवेदयेत्
॥१॥ टीका ॥ दासा गर्भदासादयः ॥ गोपाल
गवांपालनेन यो जीवति ॥ कुलमित्रं पि
तृपितामहादिक्रमागता ॥ अर्द्धसीरो हल

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न्यपीच पणिरो पल द्वित कृषिप लभागग्रा
णि॥ नापितः नाई॥ कारयिता धर्म नाश्न
नः काय का अभिरामानं निवेदयातितवान्
इति॥ एते षट् दशद्वयः प्रशूद्राणां मध्ये भोज्यान्नाः
चकारा कुंभकार श्च॥ जो पनापित कुंभका
र कुल मित्रादि का निवेदिता मानो भो॥
ज्यान्नाः॥ इति वचनात्॥ यह वाक्य पारा
र्लक मिताक्षरा के प्रथम अध्याय के
हे पत्र ४१ पर लिखे है॥ अन्न मतिप्र
प्रायश्चित्त लि० हे॥ प्रायश्चित्तेन्दु शेखरे
॥ अगम्यागमने चैव मद्य गोमांसभ
क्षणे शुध्यै चान्द्रायणं कुर्यात् नदी
गत्वा समुद्रगाम्॥ जेगा यमनासर
स्वती के उपर जाकर के प्रा० को कर
ततः विप्राय गां दद्यात्॥ २॥ अमेध्यानां प्र
पपानां अभक्ष्यस्य च भक्षणे रेतोमू
त्र पूरीषाणां शुध्यै॥ चान्द्रायणं चरेत्॥
अज्ञानतः तप्तकृच्छ्रं॥ तप्तनग
जन के भक्षण करणे से बीचा प्रा० करणे
॥ अज्ञानात्तु सुरांपीत्वा रेतो विण्मूत्र
मेव च पुनः संस्कार महेति त्रयो वर्ण
द्विजातयः॥ यह वाक्य प्रायश्चित्तेन्दु
का है॥ पत्र २३॥ और जो कोई कच्छ वी

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रायश्चित्त न करै तो कृच्छ्र स्थाने तो पंच प्रत्याम्नाया
उच्यते ॥ भागीरथ्यां स्नानम् ॥ स्नान मा
त्रेण गंगायां पापं ब्रह्मवधोद्भवं विनाश
तां प्राप्नोति ॥ कल्लोलं जेव केवलम् ॥ इति
वचनात् ॥ गंगा स्नान करणा ॥ जा दान करणा
यथाशक्ति गायत्री का जप करणा ॥ ब्राह्म
ण भोजन करणा ॥ पंचगव्य पान करणा
॥ उपवास प्रथम १ वा ३ करणा ६ तनामा
प्रायश्चित्त भी कर देवै तो कलियुग
मैं पहले मुख्य है नहीं करणा से करणा
मुख्य है लोप नहीं करणा ॥ प्रतकृच्छ्र वे ना
म पंचगव्य का है ॥ १४ को उपवास कर
१५ को पंचगव्य पान कर उसको ब्रह्म
कूर्च कहते है जो वो ना जाणे भुलकर
के मुसलमान का हो खा पीलेवे तो अ
थवा पानी पीलेवे तो पहिले कहे प्राय
श्चित्त करदेणा ॥ अलम् ॥ एक पंक्ति मे
भोजन नही करणा ६ सप जो मारणा याजावे
त्पागी ता तारा का लिखा है ॥ अप्येक पंक्ति
नोयाति संबंधि स्वजनैः सह ॥ को हि
जानाति किं कस्य प्रच्छन्नं पातकं भवेत् ॥
को हि जानाति इत्यादिना पातक संदेह ए
क पंक्त्यां न भोक्तव्यं ॥ निर्दोषत्वेन तु न भि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

तेआत्म व्यमेव॥ नवमूर्त्तां मे च्च भाराणानाने के
स्मि न व त्व न स्तथा प्र न्या न चैव गि्र ग्रहे देवा
जा र के च पं च न ति॥ न भोज नं कु र्यात्॥ यह
वा क्य मिता क्ष रा के है॥ म ने प्र० पृ श्लो० १८८ का न्तो
वि र क्तः स्नात्वा तु घृत प्राशन माचरेत्॥ प्रा चीन
देव भ क्ता न्न स्ना न मे थु नि नः स्पृ तम्॥ प्रथ
टीका॥ कृत व मनः संजात विरे कः स्नात्वा घृ
त प्राशनं कुर्यात्॥ दशा वि रेका न्ने विरिक्तः इति
गोविन्द राजः॥ यदि भक्ता मन्तर मे व व म
ति तदा प्रा च मन मेव कुर्यात्॥ न स्नान घृत प्राश
नम्॥ मैथुनं च वक्त्रं लो न्नायात् [illegible] तु म ही
वि ष य म्॥ १८८॥ स्व प्रा च्च प्रा थ म ता च नि कि
ध्या का च ता नि च यी लो पो ध्यो [illegible] भास्मा
मत्म मा लो प्य स न॥ १८५॥ वि प्र स्य द क्षि ण
क र पंच तीर्थानि॥ तद्यथा॥ पि तृ दा न पि त्र
ती थे न देवानां च वके न तु॥ इतिमन्वा प्रकृ
वीणा मध्य नो उद्द मे प्यिन॥ १॥ पं
च तीर्थानि विप्रस्य करे तिष्ठन्ति दक्षि
णे ब्रा तं देवं तथा पित्र्यं प्राजा पत्यं च वैष्ण
मि क म्॥ २ ब्रा ल पा क्षि मतो स्वा पोम दे
व मंगुली मूले ति प्राजा पत्यं क नि ष्ठ
दो मध्ये सौ म्यं विजानता॥ ३॥ जड दे
स्य प देशि न्या मध्ये पि त्र्य पातेति तज

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

कृष्णो घोरस्त्वचेव सम्पर्कं मा चाविधा
नतः ॥ ४ ॥ समाप्रुपाजर्ह स्यापि वेत्ल गः प
दमध्य पमु ॥ स्नाचोज प्राव कुर्वा वेश
तयापद्वा चयो ध्रुते ॥ ५ ॥ सोगमहतंनि
त्यमध्याति तस्य स्नानमनामयमु ॥
प्रस्नाचोरम मेतत् मंत्रे प्रज खा दूप
शोणितमु ॥ प्रजे कन्ध कुमीन्कोटानु
दद्धे शर्वेते प्या ॥ ६ ॥ प्राल्हादकारणं
स्नानं दुःखशोकापहं तथा दुःस्वप्ननाशनं
चैव काम्यस्नानमतःजस्कृ ॥ सदा ॥ ७ ॥ इति
स्नानस्य परमो विधिः समाप्तिमगमत्
॥ पद्मोत्तरखं० पाराशरीयके प्र०२ पत्र १९
प्रणवस्वरूपकथनम् प्र०२ प०१९
जापत्रीसाभवत्पतो मरत्रमस्पतिसा
दा पुनरन्योन्य दांपत्यादितिताभ्या म
भूज्जगत् ॥ १ ॥ गायत्री प्रकृतिः प्रोक्ता ॥
ओंकारः पुरुषः स्मृतः एतयोरेव संयो
गाज्जगत्सर्वं प्रवर्तते ॥ २ ॥ पादास्त्रयस्त
यो वेदास्तेषां तच्चाक्षराणि च चतुर्विंशति
वास्य तैर्हि व्याप्तमिदं जगत् ॥ ३ ॥ प्रणवे
हि प्रतत्व त्रिवेदि त्रिगुणमेव च ॥ स्ति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

देवतं त्रिधामं च त्रिप्रकारं निरञ्जनम्
त्रिमात्रं च त्रिकालं च त्रिलिंगं मन्य
विदुः ॥ सर्वमेतत् त्रिरूपं मां प्रणवं प्र
त वेन हि [illegible] सामवेदो [illegible]
धातिनि गद्यते ॥ सर्वं रजस्तमश्चैव
त्रिगुणात्मकं कीर्त्यते ॥ ६ ॥ ग्लानि वि
हम स्यापेक्षा [illegible] दैवतमिति ख्यते ॥ प्र
ज्ञि स्वरूपं च सोमस्य त्रिधामेति प्रणी
र्त्यते ॥ ७ ॥ प्रणवः प्रवर्णं वेद [illegible]
तम् दहतम् ॥ हृत्कंठतालु केवें
त्रिस्थान मिदमच्यते ॥ ८ ॥ सृष्टं
कारो वा नु मात्र प्रोक्तेति त्रिमात्रः प्रोच्यते
ध्वौ ॥ भूतं भव्यं भविष्यं त्रिकाल मि
ति संस्मृतम् ॥ ९ ॥ स्त्रीपुंनपुंसकं चैवं
त्रिलिंग इति संस्मृतं ॥ त्रिस्वभा
सितो देवो मंत्रयोगं समवाप्नुयात् ॥
ति प्रणवस्वरूपकथनम् ॥ जापत्री दो
जानाति [illegible] पासीनयो [illegible]: नामधारक
मात्रो [illegible] भवि [illegible]: क्षुद्र एव सः ॥ १ ॥ संध्यायेन
विज्ञाता न च संध्या उपासिता सजीवन
पि [illegible] स्या [illegible] पातक संयुतः ॥ २ ॥ प्रण

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पेत्र १० प्र० २ पत्र २१ पर यह दो वाक्य है ॥ छन्दो दैवत
मार्षं च विनियोगं च ब्राह्मणं मंत्रपत्र विद्
साक्षाद् द्विजः कर्म समाचरेत् ॥ विद्धि ही न भाव
दुष्ट कृतेम कद्रू पापि पत् तेल करस्य सरोस
स्य भुक्त वाद कृतात्मनः ॥२॥ प० १४ पर यह वाक्य
विप्रस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं वसति पावकः ॥
प्रक्षेपे दक्षिणे पाणौ तस्मात्तेन च संस्पृशेत् ॥ प्र.
पत्र ११३ ॥ पर यह वाक्य है ॥ विनाशं वै परे
च संग्रामे जलसंप्लवे पलायते तथा रण्ये
स्पर्श दोषो न विद्यते ॥२॥ मार्ग संयोग समये दे
वी संग संयोग तदर्थितः तत्संयोगतीर्थ प्रभा
जीनुत्वे च सुनदोष भाक् ॥३॥ मार्ग स्पृष्ट
भवे देवी [illegible] द्वितीय स्थापितस्य तेषु ॥
शिरः प्रोद्दोषा मन्ये [illegible] न्यचाचमनम्
विदुः ॥४॥ चाण्डालोदक संस्पृष्टः शुद्धः ॥
स्नानेन जायते तथा तज्ञांड संस्पर्शे स्नान
माहु मनीषिणः ॥५॥ उदक्या स्पर्शने
स्नानम् ॥ रजः स्वला स्पर्शने स्नानम् ॥
वं० पा० प्र० ६ प० ११८ ॥ रुद्रे शैवनु संस्पृष्टः
एकरात्रोपवास कृत ॥ [illegible] उच्छि
ष्टः शूद्र संस्पृष्टः शुनावापि द्विजोत्तमः
एकरात्रोपवासेन शुद्धः स्यादपर वि
दुः ॥ प्र० ६ पत्र १११ ॥ [illegible] स्ततमात प्रसज्जने ॥ श्री

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अथ वत्सरोरहित जो द्रव्य निषेध माह ॥ अ०
१ प०३६ जोरु वस्त्रा न दो द्रव्य व्यापानं तु यो जर्जे
ति छिनी प्रसूता च दशाहा वी ज्दो द्रव्य चे न
रक ब्रजेत् ॥१॥ दुर्वला व्याधिता भीता प्राप्ति
माया द्वि वत्सभूः साधुभि नैवदे द्रव्य व्याघ्रा
मि वैश्य निमी प्रभुभिः २ ॥ अथ भाभावस्याया
तु परान्न भचा लो दोषमाह ॥ चन्द्रू चायेद्वि
जा विद्वान्यो अनक्ति पराधानमु भो तुमी सा
र्जितं पुण्यं भवे दशान्न दस्यततः ॥१॥ सो मच्चा
पद्धि जो पाति स्पकान्न प्रसूवाधानस्व देव
पितृ पापाग्नि दग्धो नरकमावसेत् ॥२॥
मप्तमी कामभोगेन बध्नीते लोप भोगतः
कुहू श्रद्धन्न काष्ठे न च्यातिस्यात्सप्त मंका
तं ३ ॥ अ०३ प०४१ पर पढवा करे ॥ जजस्य
दत्तं गहीचा दध्यात् ॥ उक्तं च ॥ जजस्य हते
तुरगस्य करों महिषोवध्ये गजवां चे ॥
दु रगस्य करों ... लग्नग भाजे ॥ स्नाने प्रदसी
प्रेक्षे ॥ हुमाह लग्नग भाजे
हृद पोत पत्नी ॥ रथस्य च क्रौंच स्यस्यप
च मृग गाविका या ॥ वकरी के मरण मले
॥ अथ शय्यादानम् ॥ उपवेश्य च शय्यायाम्
॥ अथ शय्यादानम् ॥ का०प० हु शय्या दान शय्या को
स्पर्श पिड़ा कारणे ताति खावहै ॥ इसी
स्पर्श करके दान करे ताता जाता धक
सो शय्या को ब्राह्मण के डोरी के दान करणे की रीति

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

२

पह्ववाक्यवं ०पाराशरी धर्मशास्त्र के प्र० ८ प०
१३८ के उपर लिखे है ॥ कं न्यायाः मज्जु ... हो वा दानं
दद्यात् ॥ कं न्याका ॥ मज्जु ... ना पड करकष्ट
न कर लिखा है ॥ व चार्णं मूल ते व रन्य साक्ष
न दद्यात् ॥ वत्सौ का कोई मार्ज के पेड का दान
करे ॥ प्रथवा किसी फल वाले वृक्ष का दान
करे तो तिसकी मूल में हाथ को स्पर्श करके
दान करणा लिखा है ॥ भूमि दान वी भूमि को
स्पर्श करके लिखा है ॥ अथ नवग्रहाणां दानानि
॥ नवग्रहो के दान लिखा है ॥ प्र० ८ प० १४८ सूर्या
यधेनुः ॥ चन्द्र प्रसे शंखं ॥ भौम लाप वृषः ॥ प्रारुणः ॥ बुधा
य स्वर्णं ॥ जरवे वस्त्रं ॥ शुक्राय ॥ अश्वं श्वेतं ॥ शनये
कृष्णा गौः ॥ महिषी वा ॥ राहवे ॥ अपमृत्युं ॥ केत
वे छागं ॥ बकरी ॥ उक्तं चैव० पा० प्राशीय ग्रंथे
प्र० ८ धेनुः शंखो वृषः स्वर्णं वासो स्पष्टश्च ः सिताश्व
गौः ॥ प्रयश्च [illegible] छागलश्चैव क्रमशो दक्षि
णा स्मृता ॥ १ ॥ ग्रहाधीनमिदं सर्वं उत्पत्ति प्र
लयादिकम् ॥ जगत्स भावाभावो चैतस्मात्सू
ज्यत माग्रहाः २ ॥ पह्व० पा० में लिखा है ॥ और ग्रंथो
मे पढ़ते लिखे है ॥ सूर्य का दान धेनु रक्त १ वस्त्र रक्त २
जा धूम ३ गुड ४ ॥ लोटा ताम्र का ५ ॥ मधी तांबे का
६ स्वर्ण मूर्ति १ ग्रक्षरत [illegible] ८ ॥ पसे ८ यह सूर्य का
दान है ॥ चन्द्रमा का शंख नाशं खी घोरि १ श्वेत वस्त्र
२ तंडुल ३ चांदी का चांद ४ खांड ५ कांसी की था
ली वा कटोरा ६ ॥ घृत ॥ श्वेत ... घृत ८
मोति ९

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धी ॥ मौम का १ कतारा तांबेका ॥ मंगल का दू
व्रती ३ गिहूं लाल ४ गुड ५ रक्त वस्त्र ६ पु
ष्प रक्त ७ तांबेका तवा ८ चंदन लाल ९ ॥ बु
ध का दान स्वर्ण मूर्ति १ मूंग २ हरित वस्त्र
३ पीतल की थाली ४ घृत ५ ॥ दान गुरु का
१ स्वर्णकी मूर्ति ॥ ■ गे टापो ■ तलका २
घृत ३ वस्त्र पीत ४ खांड पीली ५ पुष्प
पीत ६ हरिद्रा ७ केशर ८ दधि ■ ९ ■
दान शुक्र का तंडूल स्वेत १ वस्त्र स्वेत २ खां
ड ३ कांसीका पात्र ४ स्वेत पुष्प ५ चांदीका ■
के ६ घृत ७ गऊ स्वेत ८ मोती ९ दान श
निका कुलायो: वा महिषी १ ते ल उड
स्तनजा लोहे कात सला ग ण उड स
ण सजी सा व ण तिल सरसों का ली
॥ दान राहुका चकु १ तिसला लोहेका
तेल तिल सतनजा उडद गण सजी
व ण का ला कपड़ा ॥ दान केतु का चकु १ त
स ला लोहेका १ तेल उडद तिल काला क
पड़ा सतनजा उडद सरसों का ली ॥ नग ■
उपुष्प का ले यह दान नवग्रहोका है ॥ ॥
नवग्रहो के मंत्र तंत्रों के लिखते है ॥ ओं ह्रां
ह्रीं ॥ ह्रौं ॥ स: सूर्याय नम: ॥ ओं श्रां श्रीं श्रौं
चन्द्रमसे नम: २ ओं क्रां क्रीं क्रौं स: भौमा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शनि ग्रह स्नानानि चार्जीस धूमोलाहै ॥ तिल उडद द्रोम यगु ता ग अर्घ
तिल यव गज लहरि ता ह मनशी ला सलावर नाग केशर पिंडा ते लपते

नमः ३ ओं भ्रां भ्रीं भ्रौं सः बुधाय नमः ४
ओं ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ५ ओं द्रां
द्रीं द्रौं सः शुक्रायनमः ॥ ६ ओं खां खीं
खौं सः शनैश्चराय नमः ॥ ७ ओं भ्रां भ्रीं
भ्रौं सः राहवे नमः ८ ओं स्रां स्रीं स्रौं सः
केतवे नमः ॥ ९ ॥ यह तंत्रोक्त मंत्र है ॥ ॥

ओं ह्रां ह्रीं सः खं खः भौमाय नमः ॥ यह मं
त्र भी मंगल का है ॥ धर्मसिंधु में कलि शनि
राहु केतु का दान यह लिखा है ॥ इन्द्र नील मा
ष तैल तिल कुलित्थ महिषी लोह पात्र कृ
ष्ण वस्त्र कंबल ले कृष्ण जो ॥ यह शनि का दा
न लिखा है ॥ राहु का दान ॥ जो मे दाश्व नील
वस्त्र कंबल तैल तिल लोहा निराहा ॥
केतु का दान ॥ वैडूर्य तैल तिल कम्बल क
स्तुरी छाग कृष्ण वस्त्रा ग्रीवा को तो दीना
नि ॥ धर्मसिंधु पत्र २ पत्र ६६ पर लि
शनि पीडा परिहारार्थ मुशनि वार को तै
लाभ्यङ्गः तैल दान च कार्यं मु ॥ सूर्य
पीडा परिहारार्थं रवि वार सूर्य पूजा प्रका
सः सूर्य मंत्र जपैः सर्व रोग नाश ॥ मं
त्र यह लिखी यह है ॥ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय ॥
मनन सर्व रोग नाशः यह भी धर्मसिंधु में ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धर्मसिंघ

१.२१.६६

शान्तिगृहस्तोत्र

ति.त पाप

पिपंगुगंधप

फध्रतलोह

पानेस्पृजते

गस्तानंद्को

जग.तहिंजग

दितते भ्रनि

तत छताकर

नागकेसरमिश्र

ध्रखाये तेल

पतेजाद्दीके

११

श्रीपर्वार्‍ते

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

शनिस्तोत्र वीधर्मसिंधुमे यह ति॰ है ॥
कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रो न्त
को यमः सौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पला दे
न संस्तुतः इति दशनामानि नित्यं पठे
न्नीयानि ॥१॥ ॐ नमस्ते कोणसंस्थ पपि
ङ्गलाय नमोस्तु ते नमस्ते बभ्रुरूपाय कृ
ष्णाय च नमोस्तु ते नमस्ते रौद्रदेहाय न
मस्ते चान्तकाय वे नमस्ते यमसंज्ञाय
नमस्ते सौरये विभो नमस्ते मंदसंज्ञा
य शनैश्चर नमोस्तु ते प्रसादं कुरु देवेश
दीनस्य प्रणतस्य च एतेन नमोत्रेण प्रत्यहं
प्रातः शनिस्तवनेनार्द्धं सप्त बाधि वा श
नि पीडा नाशः ॥१॥ इति शनिस्तोत्रम् ॥ श्री
अथ भौमस्तोत्रम् ॥ अस्य श्री मंगलस्तोत्रस्य
जर्जङ्क विरङ्गार ऋषिः देवता अनुष्टुप् छन्दः
ऋणमोचनार्थे विरूजो वपत्र प्राप्त्यै जपे
विनियोगः ॥ ॐ मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋण
हर्ता धनप्रदः स्थिरासनो महाकायः सर्वकाम
विरोधकः लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां
कृपाकरः धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमि
नन्दनः अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहा
रकः वृष्टिकर्तापहर्ता च सर्वकामफलप्रदः
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठे
[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ऋणरेखाप्रकर्तव्या अंगारकस्य तत्पुरतः ॥
ताः प्रमार्जयेधस्तु वामपादेन भावुकः
ऋणान् जापतेतस्य ऋणहर्ता धनि
भवेत् ॥ अमिपुत्र महातेज स्वेदोद्भव
पिनाकिनः अपोर्थी त्वां प्रपन्नोहं ऋहा
णं ध नमोस्तुते ॥ प्रसीद देव देवेश विघ्न
घ्न हारिन् धरात्मज ऋहाणं धेमया
दत्तं मम शान्ति प्रदोभव ॥ ततः प्रार्थना ॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति समप्र
भम् कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रण
माम्यहम् ॥ इति भौमस्तोत्रम् ॥ अथ
मन्त्रम् ॥ ॐ ह्रां ह्रीं सः स्वः स्वः भौमाय न
मः ॥ एतानि कुजनामानि नित्यं यः प्र
यता पठेत् ऋणं न जायते तस्य धनं शी
घ्रमवाप्नुयात् ॥ स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनी
यं सदा नृभिः न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पा
पि भवति क्वचित् ॥ अङ्गारक महाभाग भगवा
न् भक्तवत्सल ॥ त्वां नमामि ममाशेषमृणमा
शु विनाशय ॥ ऋणरोगादि दारिद्र्यं ये चान्ये चा
पमृत्यवः भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम स
र्वदा ॥ अतिवक्त्र दुराराध्य भोगमुक्त जितात्मनः
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

विरंचिशक्रविष्णूनां मन्त्रपाराणि तु कथा
॥ तेनत्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबल ॥ ५
त्रानेदेहि च नं देहि चामरासिंहासनं गत ॥ ऋ
णदारिद्र दुःखेन शत्रूणां च भयात्तत ॥ एभि
द्वादशभिः श्लोकै यः सुधीत धरासुतम् महती
मुक्तिपमाप्नोति द्वितीयपरो धनदो भव ॥ १२ ॥
अथ भौमव्रत विधिः ॥ ऋणनिवृत्यर्थं
कर्तव्यम् ॥ १० पाठ प्रातःकाल करणे १०
पाठ मध्याह्न मे स्नान करके करणे ॥ १० सायं
काल को स्नान करके करणे ॥ एक वर्ष प
र्यन्त नित्य करणे ब्रह्मचर्य से रहकर के
मंगलो भूमिपुत्रश्च० इस स्तोत्र के करणे
खदिर खैर की लकडी के कोले से एक ल
कीर काढणी तीन पाठ मातीन लकीर काढ
णी फेर तीन पाठ में वामपाद के अङ्गुष्ठ
से मेट देणी इसी तरह से तीन मा काढ
णी फेर तीन मे मेट देणी इस प्रकार १०
पाठ करणे ॥ मङ्गलवार को व्रत करणा
लवण नही खाणा एक वखत एक अ
न्न का भोजन न करणा ॥ यह विधि भौम
व्रत की है ॥ ऋणनिवृत्ति के अर्थ ॥ पुत्र
प्राप्ति के अर्थ धन प्राप्ति के अर्थ करणा ॥ भौ
रताम्र का त्रिकोण यंत्र का पूजन भी कर
ते रहणा २१ नाम यंत्र मे लखणा होते कम्भम् ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अथ शुक्रस्तोत्रम्॥ स्कांदे॥ ॐ नमस्ते भार्गवश्रे
ष्ठ दैत्यदानवपूजितः। वृष्टिरोधस्य कर्त्रे च व
ष्टिकर्त्रे नमो नमः॥ देवयानीपितस्तुभ्यम्॥
वेदवेदांगपारगः। परेण तपसा शुद्धः॥
शंकरो लोकशंकरात्। प्राप्तो विद्यां जीवना
ख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः॥ नमस्तस्मै भ
गवते भृगुपुत्राय वेधसे। तारामण्डलम
ध्यस्थ स्वभासा भासिताम्बरः। यस्योदये
जगत्सर्वं मंगलार्हं भवेदिह। अस्तं
याते ह्यरिष्टं स्यात् तस्मै मंगलरूपि
णे॥ त्रिपुरावासिनो दैत्यान् शिवबाणप्र
पीडितान्। विद्यया जीवयच्छुक्रो नमस्ते
भृगुनन्दन॥ ययातिगुरवे तुभ्यं न
मस्ते भृगुनन्दन। बलिराज्यप्रदो जीव
तस्मै जीवात्मने नमः॥ भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्व
गीर्वाणवंदितम्। जीवपुत्राय यो विद्यां प्रादात्त
स्मै नमो नमः। नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्रा
य धीमहि॥ नमः कारणरूपाय नमस्ते कारणात्म
ने। स्तवराजमिमं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि लभते वांछितं फलम्॥
पुत्रकामो लभेत्पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियं
राज्यकामो लभेद्राज्यं स्त्रीकामः स्त्रियमुत्त
माम्। भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहि
तैः। अन्यवारे तु होरायां पूजयेद्भृगुनन्दन

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

म्॥ रोगार्त्तो मुच्यते रोगात् बद्धो मुच्येत बंधनात् भयात्तो मुच्यते भयात् ॥१॥
पद्यं स्मार्थ्यपते जनः तत्तत्प्राप्नोति सर्वदा प्रातःकाले प्रकर्तव्या भग्न पूजा प्रयत्नतः सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाद्वि व संनिधिम् ॥ इति श्री स्कंधपुराणे श्रीजैकदूना विधिस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ अथ श्रीजैकविंशति नामानि ॥ श्री नारायणनमः भगुपत्राय नमः १ कौव्यायनमः २ उत्पानसे नमः ३ कृतवेन नमः ४ दैत्याचार्याय नमः ५ श्रीजायनमः ६ भार्गवाय नमः ७ मृतसंजीवनने नमः ८ हिजासन नमः ९ कृतु रूपाय नमः १० पूर्वगीर्वाणवैष्णायनमः ११ कौवय नमः १२ असुर मंत्रिणे नमः १३ हिमनेत्राय नमः १४ जगतां नेत्र रूपाय नमः १५ कवविद्याप्रदाय नमः १६ देवयानि गुरवे नमः १७ कचजीवितदात्रे नमः १८ ययाति श्वसुराय नमः १९ ययाति शापदात्रे नमः २० पंचकोणाय नमः २१ ॥ इत्येकविंशति नामानि संपूर्णम् ॥ अथ पंचकोणम् ॥
अथ मंत्रम् ॥ ॐ अन्नात्परि [illegible] ... तो रसं प्रपिबत् ॥ इति मंत्रम् ॥१॥
तोरसं प्रपिलगाव्य० ॥ इति मंत्रम् ॥
[illegible] तोरसं प्रपि... रोग का समय कालं शीघ्रबोध मे ग्रहों के दान कररो का समय काल शीघ्रबोध मे ग्रहों के दान करने का समय ... ग्रहों के दान कर ॥ प्रथम घटिका पंच सोरी मध्या लिखा है ॥ चंद्र जी के व संध्या पों भौम मे बुध के मे व च चंद्र ... पम् राहु केतै चार्दु रात्रौ सूर्य गुरि का ... पम् राहु केतौ चार्द्धरात्रौ सूर्य गुरि का इच्छा शुक्रोदये ॥ सूर्योदये वा प्रकायो: प्रसू... लोकातेन कर्तव्यम् दाना नां दान मतं मम् ॥२॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

॥अथ राहुपाठः ॥ स्कांदे ॥ गरुड उवाच ॥ राहुर्नव
गिरीं नत्वा हरिं नत्वा च नः शृणु राहुपूजां प्रव
क्ष्यामि ग्रहस्वेयः समागतः ॥१॥ आदित्याद्या ग्र
हाः सर्वे सैंहिकेयप्रवर्णजताः तस्मात्तेषु जनै
र्ध्ये सर्वपीडाविनाशनम् ॥२॥ अमृते नष्टे
देवा हर्षनिर्भरमानसाः ॥ क्षीरसमुद्र
र्थि सर्वे दानवाश्च मदान्विताः ॥३॥ उदधेरमृ
तं जातं मत्सरेण हृतं तदा योगविद्रूपमास्थाय मा सा
घयद्देवगणो हरिः ॥४॥ मोहयित्वा सुरान्स
र्वान्नपाययित्वाऽसुरान्यदा तदा राहुः सभा [illegible]
चन्द्रसूर्यौ नारकं तः ॥५॥ विभज्यामृतमा
ज्ञाय राहुपीतामृतं हरिः ॥ सुचितं चक्र [illegible]
प्यभोज्यगारं सर्वतदा ॥६॥ द्विधाभूतो ज
ह चैव सापितो विभ्रना हतः ॥ प्राणिनामुदुः
खदो राहुः [illegible] नासुखदो भवेत् ॥७॥ इति राहु
पाठः ॥ अथ राहुदानश्लोकः ॥ सूर्पे खड्ग सु
वर्ण नागसहितं धान्यैः फलैः सप्तभिः कुष्माण्ड
मुतिलं तद् तैलं [illegible] लवणं कस्तूरिकां सर्व
पानु नारिकेलं मपानाहो [illegible] मे द
कं शष्पकां दद्यात् सीसकं कृष्णधान्यसहितं
राहुग्रह प्रीतये ॥ इति राहुदानश्लोकः ॥ श्री
॥अथ केतुपाठः ॥ स्कंध उवाच ॥ महाप्रज्ञ ॥ पी
खा केतुश्चान्तः [illegible] रूपश्च क [illegible] बहुरूप
धूम्राभः श्वेतः [illegible] पीतं भूत ॥१॥ धी
पारूपो [illegible] दा [illegible]

कृष्णधान्य मृ उडद

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

करनिष्ठा नामिकांगुष्ठैर्नासाग्र कर
पीडनं ओंकारमुच्चार्य प्रोक्तं यतेश्च
ब्रह्मचारिणः॥१॥ पञ्चाङ्गुलिभिर्ना
साग्र [illegible] पीडनं प्रणवाभिधम् गृहे
सर्व पापघ्नं वानप्रस्थ [illegible] स्थ
योः॥२॥ नारायणसार संग्रह ग्रंथमे
पत्रे ८८ पर यह प्राणायाम का वाक्य
है। गृहस्थि को पञ्च अङ्गुलि लगाक
र प्राणायाम करणा॥ ब्रह्मचारि य
ति को तीन अङ्गुलि लगाकर नासि
का पर प्राणायाम करना लिखा है॥

जप-त्री का विसर्जन यह है भगवती देवी त्वम्
स्व स्व स्थानं गच्छ॥ अनेन अष्टोत्तर शत संख्या
के न गायत्री जपेन अथवा यथा संख्या रव्य
जपेन श्री सविता देवता प्रीयताम्॥ उत्तरे
शिखरे जाता भूम्यां पर्वतवासिनी ब्रह्म
णा समनुज्ञाता गच्छ देवी यथा सुखम्॥

२४ गायत्री है सख्य ब्रह्म गायत्री है वैष्णव इष्ट
को विष्णुपरमानते है॥ शैव स्मार्त [illegible]

[illegible]

[illegible] ओंजता [illegible]

त

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गायत्री का जप २ प्रहर रात्रि गई तब करणा
कछ दोष नहीं उपरान्त न हि करना ॥ बो न जो
बालमीत स्वाह के मध्या हो तर गायत्री नहीं जप

राम गायत्री यह है ॥ ओं दाशरथाय वि
द्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो
राम प्रचोदयात् ॥१॥ विष्णु गायत्री यह है
ओं नारायणाय विद्महे वासुदेवाय
धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात् ॥२॥
लक्ष्मी गायत्री ॥ ओं लक्ष्मी महादेवि
च विद्महे सर्वकार्य करण्य धी
महि तन्नो महा लक्ष्मी प्रचोदयात्
॥३॥ गणेश गायत्री ॥ एकदन्ताय वि
द्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो
गजमुख प्रचोदयात् ॥४॥ अघो
र मंत्रः अघोरेभ्यो घोरेभ्यो घोर
घोरतरेभ्यः सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो न
मस्ते अस्तु रुद्र रूपेभ्यः ॥५॥
ओं ह्रौं फट् स्वाहा यह मंत्र वि
ल्वपत्र तोडने का है ॥ अथ मंत्र
इसी मंत्र से बिल्व तोडने का मंत्र ॥
कहीं कोज बतलाते दक्षा देखा
नारन्ना ॥ ६ ॥ कोज वत के देश है उ
पर नहीं देखा भर है ॥ प्रलेख ॥
सप्तम्यां रविवारे ग्रहे जन्मदिने
तथा निशा संध्या ... सप्ताष्ठी
न कुर्यात् तुलसीपत्र ॥ निर्णयसिंधु मतेः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

द्दष्टरूपोद्दष्टस्य जन्तूनां भयकारकः ॥ ना
नाच्येतानि केतोश्च नित्यं यः प्रयतो पठेत् ॥
केतुपीडा न तस्यास्ति सर्पचोराग्निजो भयम् ॥
३ ॥ नंद्यात् गृह ज्ञाप वैडूर्य्य केतवे तद्यः ॥ १
ठे प्रयतो नित्यमुपचं पचोदुर्मेव वा मृकः ॥ स
र्व भयभयोपि सर्वान्कामानवा [illegible] ५ ॥ इति स्क
न्दपुराणे केतुस्तोत्रम् ॥ अथ अन्नपूर्णा स्तोत्र
म् ॥ अस्य श्री अन्नपूर्णा मंत्रस्य द्रुहिण ऋषि
राकृतिश्छन्दः अन्नपूर्णा देवता ह्रीं श्रीं क्लीं
विजानी स्वाहा शक्तिः अन्नपूर्णा सिध्यर्थे ज
पे विनियोगः ॥ द्रुहिण ऋषये नमः शि
रसि ॥ आकृतिछन्दसे नमः मुखे ॥ अन्न
पूर्णाये नमः हृदि ॥ वीजेभ्यो नमः नाभौ ॥
स्वाहा शक्ती गुह्ये ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ ह्रीं श
श्रीं शिखाये वौषट् ॥ क्लीं कवचाय हुं ॥ नमः
नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ॐ
मुखे ॥ ह्रीं नासिकायाम् ॥ श्रीं अक्ष्णोः ॥ क्लीं क
र्णयोः ॥ नमः गुह्ये ॥ भगवत्ये उपस्थे माहे
श्वर्य्ये अन्नपूर्णाये नमः जानो स्वाहेति पाद
योः ॥ अथ ध्यानम् ॥ तप्तस्वर्णनिभा शशांकमकु
टा रत्नप्रभा भासुरा नानारत्नविराजिता ॥
त्रिनयना भूमिरमाभ्यां युताम् ॥ दर्वी हाटक
भाजनं च दधती मुरम्या चपीनस्तनी नृत्यन्
तं शिवमा [illegible] पमुदिता ध्येयाऽन्नपूर्णे
श्वरी ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अन्नपूर्णे देहि अन्नादि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ते ओं ह्रीं क्लीं भगवती पार्श्वे अन्नपूर्णे ठः ठः॥ यह की मंत्र अन्नपूर्णा को है॥ २

पतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा॥ ग्लौं धरां वामे पूजनीया॥ ओं ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं देहि अन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय॥ स्वाहा॥ श्रीं ग्लौं ओं श्रीं ह्रीं नमः॥ शिवाय॥ ओं नमो भगवते वाराहाय उर्वी पतये मः पशुं चमे देहि दापय स्वाहा॥ ओं नमो नारायणाय॥ अथ अन्नपूर्णा मंत्रः॥ ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा॥ १॥ इति अन्नपूर्णा स्तोत्रम्॥ ओं क्षिप ओं स्वाहा॥ यह मंत्र गरुड जी का है॥ एक माला फेरणे से सर्प का भय नहीं होता है॥ इस मंत्र की १ माला नित्य फेरणी चाहिये फेर यह मंत्र सिद्ध होजाता है जिसको सर्प काटे उसको इस मंत्र से जल पढ कर देना जहर नाश होजा अजलम्॥ ओं सहस्रज्वालिनी मृत्युनाशिनी स्वाहा॥ यह मंत्र अपमृत्यु नाशन है॥ विशूचिका रोग नष्ट करने वाला है॥ इसको भी एक माला नित्य जपणे से सिद्ध होता है॥ अथ माला संस्कार लिख्यते॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ओं अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव। शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥

ओं ... तिष्ठति माला भिर्मंत्रं जपति यो नरः। सर्वं वै निष्फलं याति क्रुद्धा भवति देवता॥ १॥ सनत्कुमारोपि॥ कार्पास संभवे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सूत्रं धर्मकामार्थसिद्धिदं मोक्षदं तं च विप्रे
न्द्र कन्याभिः निर्मितं च सुशोभनम् ॥ २ ॥
यथा मुक्तं तथा रक्तम् पट्टसूत्रमथापि
वा शांतिवश्यादि चारु [illegible] जपे
सुधे ॥ ३ ॥ मुक्तं रक्तं तथा [illegible] पीत व
[illegible] च क्रमात् ॥ सर्वेषामेव वर्णानाम्
रक्तं सर्वार्थप्रदम् ४ त्रिगुणं त्रिगु
णं कृत्वा तद्वत् त्रिगुणं तथा ग्रंथयो
त् [illegible] स्वचित : ॥ एकैक [illegible] का
[illegible] तवारं जपेत्सुधीः ॥ [illegible] कोव
र्णी ॥ ५ ॥ मंत्र [illegible] पर लिखा है ॥

[illegible] सर्प के काटे पर १५ [illegible] ला
ला कर के [illegible] पर रख दे
[illegible] अवश्य होगा ॥ [illegible]
र सिंदूर को मरजी के अंडे मा पीस
कर के गरम कर के कागज पर ल
गा कर के [illegible] पर रख दे [illegible]
से [illegible] बिमारि [illegible]
हीं होती ॥ बिच्छू के काटे की औषध ॥
[illegible]
बिच्छू के काटे पर लगाने से आराम [illegible]
॥ [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः
कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं ॥
पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं [illegible] विलोमप
दैः ॥ मातृका मध्यसूत्रेण जं प्यपेन्मध्यमध्य
तः [illegible] ब्रह्म लिङ्गेऽपि वेधयित्वा मेरुं च ज्योतिः संयु
तम् ॥ १ ॥ [illegible] पिठा पुनः स्थाप्य ततः संस्कारमाचरे
त् ॥ जोरितिः ॥ प्र खं प्र [illegible] संयोज्य [illegible]
[illegible] न योजयेत् गोपुच्छ [illegible] स्य [illegible] श्रीपालो यदि
वा सर्पाकृति प्रभो मृ ॥ एवं विनिमीय मा
लां [illegible] वै [illegible] धये स्पुरमु ॥ ६ ॥ पश्चात् प्रस्वस्थ
पत्रैः नवकैः पद्माकारं तु योजयेत् ॥ तन्मध्ये ॥
स्थापयेन्मालां मातृका मूलमन्त्रेण तु ताल
ये सत्त्वस्थे [illegible] सद्योजातेन पञ्च लैः ॥ मा
लां स्थापयेद् धीमान् करण्या [illegible] द्धीमा [illegible] मातृकावर्ण
[illegible] मूल चपठेत् [illegible] पञ्चगव्यमन्त्रैः ॥ सद्यो
जातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः भवे भवे
नाति भवे भजस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ इति ॥ च
न्दनगन्धाद्यैः वामदेवेन चार्चयेत् ॥
ॐ नमो वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमो रुद्रा
य नमः कालाय नमः कलविकरणाय न
मो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय
नमो मनोन्मनाय नमः ॥ सर्वभूतदमनाय नमः
॥ ततः अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपे
भ्यः इति [illegible] ॥ ॐ तत्पुरुषाय वि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ॐ

मुहे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति मन्त्रेण दीपं ॥ एतत् पंच मंत्रैर्वा स्वैकं च गुप्तेगुप्त पंच मंत्रैः ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ इति मन्त्रेणाङ्कादितैर्वा ॥ तत्रैवोम् प्रत्येकं मन्त्रयेत् ॥ [illegible] ॥ जो तमीपे सम्पदाय मालाविधिं कुर्यात् पञ्चगव्येन वस्त्रेण संस्थापनं मंत्रयेदिति ॥ तत्रा प्रबन्धपत्रपुष्पे मालां स्थापयित्वा दक्षिणे करे निधाय स्वीं ह्रीं क्रौं अमुकदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः अमुकदेवतायाः जीव इह स्थितः अमुकदेवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु ॥ स्वाहा इति मन्त्रेण प्राणान् संयोज्य ॥ मालायाः प्राणप्रतिष्ठानन्तरं देवतां पूजयेत् ॥ सनत्कुमारे ॥ संस्थाप्य विधिवत् मालां तस्यां प्राणं तत्र धारयेत् ॥ मूलमंत्रेण तां मालां पूजयेद् विजसत्तमः ॥ तथा ॥ माले माले महामाले सर्वतत्त्वस्वरूपिणी चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ इति मंत्रेण मालां पूजयेत् ॥ ततः कर्मणि जपमारभेत्

[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रो: मन्त्रयेत् ॥ प्रथमो नर शतं हुत्वा संति
या सा विनिद्दीपेत् ॥ होम कर्म शतकत्वे ॥
द्वि गुणं जपमाचरेत् ॥ नान्यमन्त्रं
जपन्मन्त्री कंपनं नैव चरनयेत् ॥ कं
पनात्सिद्धिहानिः स्याद्योनिनैव कु
दुःखदम् ॥ उद्वेजनं मम द्रव्यं क
दम्भ धावि ना क्रुद्धेत् ॥ छिन्ने सूत्रे
भवेन्मृत्युः तस्माद्वचनपरो भवेत्
॥ ओं त्वं माले सर्व देवानां सर्वसि
द्धि प्रदा यकः ॥ तेन सत्येन मे सि
द्धि देहि मातर्नमोस्तु ते ॥ इत्युक्तो
पारि हृज्जपाः स्याज्जपपदे तु ॥ तुष्टतो ट
हितरक्त पुष्पैः समर्चयेत् ॥ वादशपं
वेद्धवी माला कर्तव्या शापवोस के ॥
शांतिनामपि कर्तव्या राज्ञो भक्त्या प
थाविधिः ॥ प्रथस्यां च नवस्यां च
चतुर्दशीं तथैव च त्रयोदश्यां तथा
कुर्यात् शिवस्यापि महेश्वरीमु ॥ काम
नाभेदेत् ॥ अङ्गुलिनियमः ॥ तर्जन्यां
जप्त को न नशस्त्रं चाटनं वारक मु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अङ्गुष्ठमध्यमा योगे मंत्रसिद्धिसुनि-
श्चितम् ॥ अङ्गुष्ठनामिकायोगा दुष्टो-
च्चाटने मतं ॥ ज्येष्ठा कनिष्ठयो र्यो-
गेन शत्रूणां नाशने मतम् ॥ जोत
श्रीय ॥ जीर्णै सूत्रैर्गुंफन [illegible] सूत्रम् ॥
अंग्यपित्रा शतं जपेत् प्रमादेन त-
तो तस्मा द्द्रुतमष्टोत्तरं जपेत् ॥ अ-
ङ्गुल्याप्रतमेकन्तु रेखा दृष्टा उगो
भवेत् ॥ पर्वं वै शतगुणं शांखं पूतञ्जीवा
दृष्टा फलम् ॥ भाषा मे जो या पाते की माला
कहते है ॥ प्रवालक सहस्त्रे सु पद्मे श-
त सहस्त्रकम् ॥ स्फाटकैः कोटि स्त्रका-
नाम् दशकोटि सुमौत्तिकम् दर्भा को-
टि कुशाग्रं च मुस्वर्णे शत सहस्त्र-
कम् रूद्राक्षे तादकोटि सुग्रन-
तं तुलसी फलम् ॥ वीनामंत्रेण
योध्यते रूद्राक्षं भविमानवः सपाति
नरके घोर यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥
इति मालासंस्कारः ॥ श्रीरस्तु शुभं

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

संस्कारविधि प्रस्थापितम्:

॰अथ तिथि:॥ गणेशमाला चतुर्थ्यां॥ लक्ष्मी
माला पञ्चम्यां॥ सूर्यमाला सप्तम्यां॥
शान्तिमाला॥ अष्टम्यां वा नवम्यां वा
चतुर्दश्यां॥ विष्णुमाला द्वादश्यां॥
शिवमाला त्रयोदश्याम्॥ इन्हीं ति
थियों में इष्ट देवता की माला का
संस्कार करना लिखा है॥ ग्रन्थ के म
रसंग्रहता में लिखे है॥ अन्य प्रकार से मा
पि माला संस्कार:॥ पुण्यपर्वणि एकैकं मात
ृकावर्णं॥ ओं ओं ओं आं इत्यादि क्रमेण प
ञ्चगंधापि त्वा मध्ये च्छेदतु हो ग्रन्थि
ओंषि वदत्वा॥ द्वा इति पञ्चन स्नन
ह्रुपेन मेरु गंधपिलवामरडली॥
जोपुष्पाकारांतच्या सर्पाकारां इन्द्वा
मालां समाधाय नवश्रीरसच्चत्थपत्रैः
पद्माकार घटकं विधाय संस्कारात्पूर्वं तत्रै
तत्रतां स्थापयेत्॥ अथ संकल्प: देश
कालं स्मृत्वा अमुक जो गोत्र है अम
क शर्मा है सो इष्ट मंत्र सिद्धि कामो
अमुक देवता माला संस्कार महं क
रिष्ये॥१॥ तदङ्गत्वेन गणपति पूजन
चाहं करिष्ये॥१॥ ततो घटक स्थापनपूर्वं माला

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

याम्॥ मूलमुच्चरन्नु पंचगव्यैर्निर्दीप्य॥
सद्योजातं प्रपद्यामि इति मंत्रेण ॐ हुं क्षौ
तैः क्षालयेत्॥ ततः सम्पूज्य मालां स्पृष्ट्वा
॥ईशानः सर्वविद्यानां इति मंत्रेण प्रत्ये
कं शतं जपेत्॥ ततः ह्रीं माले माले महा
माले सर्वतत्त्वस्वरूपिणी चतुर्वर्गस्त्वयि
न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥ इति मंत्रेण प्र
पूजयेत्॥ इति प्राक्कि विसर्पं॥ अन्यं देव
मालादूजोयानु रां श्रीं ॐ मालिकायै नमः
इति मंत्रो ज्ञेयः॥ विष्णुमालायां तु ॐ तैः
धौतैः पुष्पैः पूजनं कुर्यात्॥ ततः संगति
वध्वा ॐ वं माले सर्वलोकानामिष्ट सर्वसि
द्धिप्रदा मता तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि
मातर्नमोस्तुते॥ इति प्रणम्य नमस्कारं
कु०॥ इति मालासंस्कार संक्षेपः॥ अथानु
ऽथ जपमालानां मणयः॥ तत्र गणेशस्य
गजदन्तमणयोः स्मृता॥ सूर्यशक्त्योः स्फटि
कजाः॥ विष्णोस्तु तुलसीकाष्ठजाः॥ गोपाल
स्यतु श्रीलपद्मादिजाः॥ शिवस्य रुद्राक्ष
जाः॥ लक्ष्मी विद्रुमेन्द्रवेति॥ सर्वमंत्रजपे
श्वेतकपद्मादिजाः॥ तुलसीकाष्ठजा च प्रश
स्ताः॥ गणेशस्यपि शक्तेर्गारक्तवर्णप
द्मसन्नमु प्रकरसोमु॥ विष्णोः कार्पासस्तरसूत्र
पभनोलस्तंबा॥ शिवस्य वल्कलजा॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

उरींस्त्रंवा ॥ आवर्ततेनैव गुरवं मुंचेत् ॥
प्रनष्टे गुणातीतं नवतन्तुकमिति यावत्
न न्यायाधिकारं तन्तु कर्तुं न अर्हस्तु ॥ शाल
णं केन्यां कर्तितम् सधवा शालागीकर्ति
तम् यास्त्रं ग्राह्यम् ॥ इत्थं तत्रालानाम्रुम
णयः ॥ शुभमस्तु ॥ अथ शीघ्रवृद्धि ॥ म [illegible]
न शुद्धिर्व्रीनीकर्तुं जपहोमादि न [illegible] या मं
त्रनिष्फलाः सर्वाः प्रकार [illegible] अन
ष्टिता ॥ यावत्सो विनाचेत् प्रागसुरा विफ
ता बुधा ॥ अदीक्षा पेचुकु वेन्ति जपपूजा
दिकानि यानि फलन्ति सौपे तेषा शैल्या
याम् इवबीजवत् ॥ अथ गुरु शिष्य परीक्षा
॥ गुरु शिष्याव भोमोहादपरीक्ष्य परस्परम् ॥
उपदेशं ददत्यक्त्वा प्राप्नुवात पिशाचताम् ॥ अ
शास्त्रीयोपदेशो तु योऽगृह्णाति ददाति च भुंजाते
ता उभौ घोरान्नरकान्ने काविंशातिम् ॥ अ
नेक मंत्रविज्ञानं नातिष्ठति कदाचन [illegible]
न तस्मात्परीक्ष्य वक्तव्यं अन्यथा निःफ
लं भवेत् ॥ ज्ञानेनक्रियया वापि गुरु शिष्यं
परीक्षयेत् ॥ सम्वत्सरं तदर्धं मासं तदर्धं
अयत्नतः शिष्योपि त द्वारा रेतः वर्षा ॥
गुरु परीक्षाणाम् ॥ गुरु गेह स्त्रीरंकान
कदाचित् यतिगुरुः ॥ बहुवाक्य स्रुतसंगी
ताके है ॥ मंत्रकोग्रहीके ॥ अभ्यासीको सभी लीले

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

आयत्रीश्रापमोचन और मृतशुद्धि। यह दो
नोगायत्री उपरध्यार गामेलिखे है॥ श्री श्री
वृहत्पाराशरीय धर्मशास्त्र मे अध्याय ९ पृ०॥
१५६ पर उत्पात लिखे है॥ अथोत्पातानिलि
ख्यन्ते॥ अश्व [illegible] प्रस्रवेदः प्रतिमा
सु च मदं [illegible] गर्भिणीनां अकुतो पि॥
ध्वनिर्यदि [illegible] काक कपोताद्या वि
शेयुर्यदि वा गृहं विशुद्धिरीतवज्जाया प
तनं वा भवेद्यदि पदाकु काक संसर्गो वि
परीता च दर्शयन्म एते अजाते उ
त्पातेषु शान्ति विधेयाः काका[illegible] काक मै
थुन को जो पुरुष देख लेवे तो उसको
१ वर्ष तक मृत्यु का भय होइ सके वास्ते शान्ति
सार करनी यह याद्दाश्त वो को देखकर के शा
न्ति अवश्य मेव करनी चाहिये॥ और जो
गो कोठे पर चढ जावे उसको ब्राह्मण को दे दे
और शान्ति कर ली॥ और जो गो भाद्रपद मे और
रपौडी श्रावण मे वा दिन मे ब्यावे तो उ
सको ब्राह्मण को दे देना चाहिये॥ सिंह का सूर्य
हो तो दोष जो कि भाद्रपद मे होता है जो सिंह
का सूर्य न हो तो दोष नहीं लगता है॥ सब उ
त्पातो मे [illegible] विधेया है [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रथकं च्यादाने वर लदाराम् ॥ व० पारस्करीय
धर्मशास्त्रे ॥ प्र० ५ ॥ दूरस्था [illegible] विधानं
तम दू [illegible] गशीयसीं शूद्रा [illegible] निर्धनां नीच
न देशावे च्यकाबद्धौः ॥ १ ॥ चाति दूरे न चा
प न्ने मत्साट्ये चातिदुर्बले व्राहि हीने वं
हूर खे च पट्ट सकन्या न गेयत २ ॥ प्रथकं
च्यादाने प्रायश्चित्तकारी ॥ [illegible] पेता महो भ्राता
माता मातामहो पिता कन्या [illegible] मे रोते ह
ह भावे परः पर ॥ अधिकारी च दानस्या त्रदा
ख्या पन्न्यप स्वसा [illegible] रा च खय जम्य
कन्या पि वर य कुर्यात् ॥ नाप्युकेतो पारस्वाने
प्यतम् ॥ अथ कृषिकर्म विधिः ॥ षट् कर्म
सहितो विप्रः कृषिकृत्ति समाचरेत् ही
नाङ्गं व्याधि संयुक्तं प्राणहीनं च दुर्ब
लं च क्षुधितं त्वचितं श्रान्तं प्रत्नाहिनं
वाहयेत् ॥ स्थिरा ज जी दृजन पुंसांड
पुरुड विवर्जितम् ॥ सा तेन च सर्वं तत्
दुवाहये दु पंसमुके वीर ॥ वाह येद्दृव
स त्स्याचं मूत्रतः स्नानं समाचरेत् ॥ ३ ॥
[illegible] ३५० ३५ ॥ चन्द्र दयेतियो विप्रो यो पुन
किं च पं के चित् ॥ तं पक्ष दश व [illegible]
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

34

न्ति पितरो हितम् ॥ अ० ३ प० ४१ श्रीः॥
व० पा० अ० ५ प० ११ देवे कर्मणि सम्प्राप्ते तिथौ
प्रत्योदितो रविः सा तिथिः सकला ज्ञेया पित्रे परी
तातु पैतृके ॥१॥ स्नाने भोजने चैव दानेध्या
वने मैथुने तिथि स्नानकालिको ग्राह्या जन्म
मरण की रति श्रावै २ एकोद्दिष्ट तु मध्याह्न
मध्याह्न मे एकोद्दिष्ट श्राद्ध करणा लि० है॥
अपराह्न मे पार्वण श्राद्ध ॥ पूर्वाह्न मे नान्दी
मुख श्राद्ध करणा लि० है॥ श्राद्ध मे
सायाह्न व्यापिनी तिथि ग्राह्य है॥ घृत के
वा तिल तैल का दीपक प्रज्वालित करणा॥
लिखा है॥ श्री लिए सगोत्र को श्राद्ध मे
भोजन नहि जमावणा॥ अमरा वृ
हस्पति शरीर धर्मशास्त्रे अ० ५ प० ११॥
ब्राह्मणं न सगोत्रं वै पूजयेत्पितृ
कर्मणि नैव प्रीतिं प्रतितत्ते बोधि तु
स्यात्तु नेरा शतां १॥ सगोत्रं भो जये
यस्तु पितृश्राद्धे च वै द्विजः ह तास्तु
पितरस्तेन नरकं फलं भवेत्॥
२॥ श्राद्धे वै वृद्धि ... दिजा ... पर्स्तु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अथ बालकस्य दं[illegible] द्वौ बादौ र
क्षा विधिः ॥ वासुदेवो जगन्नाथः
पूतनातर्जनो हरिः रक्षतु त्वरि
तो बालं मुंच मुंच कुमारकं ॥
कृष्ण रक्ष शिशुं रक्ष मधुकै
टभमर्दनः प्रातः संगवमध्या
ह्ने सायान्हे [illegible] संध्ययोः महानिशि
सदा रक्ष कंसारिनिषूदनः [illegible]
रेजः पिबा [illegible] महाभय
पिबाल [illegible] विष्णु [illegible] र
महाभवान [illegible] हि हरे नित्यं
त्वद्रवा भूषितं [illegible] इति मंत्रा[illegible]
मंत्रेणैव [illegible] तेन भस्मना [illegible]
ललाटादंगेषु रक्षां कुर्याद्यथाविधिः
॥ इति धर्मसिन्धुग्रंथे लिखितम् ॥३
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
पर[illegible] पूर्वोधौ ॥ [illegible] ॥

अथ बालरोदनपरिहारार्थं मंत्रं लि
ख्यते ॥ रुद्र रुद्र महादेव नीलग्रीव
जटाधर ग्रहैः सह तो रुद्र त्वं
च पं चकुमार कं यथा मंत्रं भूर्ज
पत्रे विलिख्य तन्मध्ये [illegible] भुजे बध्नी
यात् अनेन बालरोदनपरिहारो
भविष्यति ॥ बालरोदनपरिहारार्थं यं
त्रमुद्धृतं परम् ॥ वडस्व न ध्ये ह्रींकार सं
मेध्ये गोगणान्नाम विलिख्य षट्कोण
षपडद्वोराग्नि विलिख्य तद्बहिर्नेमि
वसुदलं दद्यात् विलिख्य तद्बहिर्धाम स्वरुद्ध
चन्द्रे राव ध्यं पंचोपचारैः सम्पूज्य बाल
हस्ते बध्नीयात् ॥ १ ॥ इससे बालक का रो
ना रुदन करना दूर हो जाता है ॥ अथ
सुखप्रसव विधिः ॥ श्री धात्र सर्व मंत्रः ॥
हिमवत्युत्तर पार्श्वे सरथा नाम यक्षी
णी तस्याः स्मरण मात्रेण विशल्या
र्भिणी भवेत् ॥ ओं ह्रीं ओं स्वाहा इति मं
त्रेण दूर्वांकुरेण तिल तैल शतं सहस्त्रं
वाऽभिमंत्र्यां किंचित् पावयेत ॥ किंचिन्मा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

२०

36

मधु रामेंदु उदा मा
लीतोरस्य

कहा के द्वापर के प्रनाम में कुरुक्षेत्र में घेर
पर अप्रावेग जब तेरो अर्जुन रथ ह
री होगा ॥ अब कु ज्योफा [illegible] सर्वे जो मैं
और भी कहते हैं कुञ्ज [illegible] मैं चेत [illegible] र
नरण की भगिनी षडपुर [illegible] सवा नम मेरा [illegible]
सीता जी को जो प [illegible] कर के भं [illegible] रा के
[illegible] जो पीत वन [illegible] जी को [illegible] को
[illegible] पे [illegible] पा [illegible] र
[illegible] सो पवारम [illegible]
[illegible] सिवचौपी
[illegible] मे
कनौ

Sarvagya Sharada Peetham

···के सो के धोषा कर्‍या जव के धर्म
···वान के सत के मार एो के वास्ते गए तव उ···
···ज व के पास ते वस्त्र मांगे उस ने दुष्ट वाको
···के हा को तुमारे भोग्य वस्त्र न होहें उ
···पर श्रीकृष्ण भगवान को वो हर जाव
···ने रस ··· व· हाथ से उस क
···त्यागि ··· पापको
···रामचंद्र जी के वि
···सम ··· नीरघु ··· जानी
···मव ··· दूत दशरथ ···
···वा पा ··· रम ···
···
···सानी मे···

CC-0. Lal Bahadur Shastri U

है मासेकी फक वा दुध को साधरा त्रिव
तो ले रोग गर्भ में है तो तीवार जो बालक को
रोग हो जावे उसके जीवन के कर
देता है पशु फक्की सम्म रोग बालक को दु
कर देती है ॥ अब नारूवे का की औषधी
लिखते हैं ॥ जो नासाके से सिरा कर
के भार सौ बर श्रावे या मुस्से नासि
का से बहुत जोर से भर रहे तो इस
का आराम नो तिसका उपाय यह है
आध सेर गरम करके दुध को उस
मे घृत ताजा ४ पैसा भर गेर कर
पीवणा ८ रोज तक ॥ औरभी नो हे
घृत से धोना यह औषधी आराम
करने वाली है ॥ जो तन पुरुष का नार
गर आवे तो रबडी पांवरा से पाति
नजड खातो सो पाठा प्याज बहुत दूर
ना वेगा यह ॥ आराम हो जावेगा ॥
अब भगसंकोचन औषधी लिखते है ॥
महदी फटकडी माजू लोद मिलाय
कर के पाक कर के योनि पर बांध व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham